चन्दामामा
जनवरी १९८३
RS .75

जादू!

जादुई धागा :
पानी भरे गिलास में से
बरफ का टुकड़ा
धागे से उठाओ!

रहस्य :
धागे का छोर बरफ पर रखो।
इस छोर पर नमक डालो, २० तक
गिनो और बरफ का टुकड़ा उठा लो!
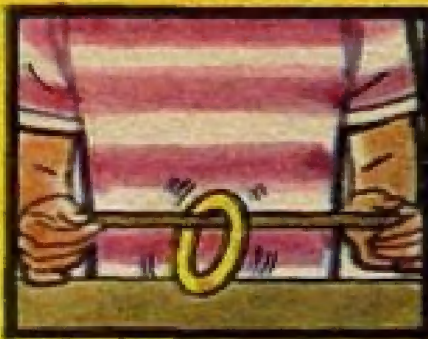
चलनेवाली अंगूठी :
एक खूब चिकनी छड़ी लो।
उसमें एक अंगूठी डालो। छड़ी को
दोनों ओर से पकड़कर इस तरह
बिल्कुल स्थिर रखो कि अंगूठी मेज की
सतह को बस छूती रहे। अंगूठी
अपने आप छड़ी के एक छोर से
दूसरी छोर तक चलेगी।

रहस्य :
यह है गुरुत्वाकर्षण का जादू।
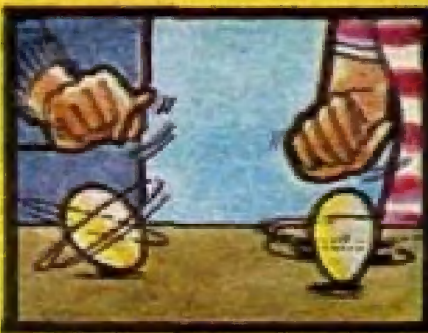
जादू का अंडा :
किसी से कहो कि कच्चा अंडा नचाकर
दिखाये। असंभव? लेकिन
तुम्हारे लिए नहीं।

रहस्य :
दो अंडे लो। एक पूरा उबालकर ठंडा
किया हुआ और एक कच्चा। पूरा
उबाला हुआ अंडा नचाओ और साबित
कर दो कि तुम एक महान
जादूगर हो।

ऐसी अद्भुत हाथ की सफाई से अपने
दोस्तों को चौंकाओ और अचंभे में
डालो। इसे [illegible] बहुत आसान है
लेकिन इसपर विश्वास करना कठिन!
एक और जादू है जिसे तुम बहुत आसानी से
कर सकते हो। अपने नाम से स्टेट बैंक में
एक बचत खाता खोलो। तुम्हारी उम्र यदि
१० वर्ष से कम है तो अपने डैडी से कहो कि
तुम्हारे लिए खाता खोल दें। अपना जेब खर्च
और उपहार में मिलने वाले रुपये उसमें जमा करो।
फिर देखो जैसे-जैसे तुम बढ़ोगे, वैसे-वैसे
तुम्हारे रुपये भी दुगुने, तिगुने होते जायेंगे।

**खेल-खेल में भी
बचत हो सकती है।**

CHAITRA-SBI-936 HIN

A burst of frolic!
NP
007
BUBBLE GUM
Treat yourself to
NP 007 bubble gum.
Savour its delicious flavour
and revel endlessly
with its bubble-power.
Bubble after bubble.
THE NATIONAL PRODUCTS,
Bangalore 560 032.
Pioneers in chewing gums and bubble gums.
Beware of spurious and inferior Bubble Gums.
Proven quality certified by
IS:6747
ISI

जीवन और हनु की वार्ता

कुत्ते और उनके कारनामे

कुत्ता सदा से ही मानव का सबसे वफ़ादार साथी और दुलारा रहा है। इससे अधिक और क्या हो सकता है कि वह अक्सर अपने सर्वोत्तम मित्र यानी इन्सान को बचाने या उसकी सुरक्षा के लिए अत्यन्त बहादुरी व बुद्धिमत्ता भरे कारनामे कर दिखाता है।

रिकी एक वेल्श गड़रिया कुत्ता (शीप डाग) था जिसे दूसरे विश्व युद्ध में सुरंगों (दबाये गये बमों) का पता लगाने के लिये प्रशिक्षित किया गया था। एक बार, 1944 में एक सुरंग में विस्फोट हो जाने के कारण रिकी और उसका मालिक बुरी तरह जख्मी हो गये। सुरंग के इलाके में इतना खतरा था कि उनकी सहायता के लिए वहां जाने की हिम्मत किसी में नहीं थी। ऐसे में जख्मी रिकी ने सूंघते हुए सुरंग में से सुरक्षित रास्ते का पता लगाया और डाक्टरों को अपने अधमरे मालिक के पास ले गया।

एक दूसरी बचाये जाने की अजीबोगरीब कहानी लैडी की है जो सुनहरे रंग का शिकारी कुत्ता था। 1947 में समुद्र तट पर खेलते हुए उसने चिल्लाने की आवाज सुनी — और एक डूबती नाव में दो लड़कों को देखा। लैडी तुरन्त उनके पास तैरता हुआ गया और उन्हें अपना पट्टा पकड़ा दिया। फिर वह नाव को धकेलते हुए तैर कर किनारे पर वापिस ले आया।

स्विटज़रलैंड की पहाड़ियों में सेंट बर्नार्डों को बर्फ में फंस गये या दबे हुए लोगों को बचाने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। पिछले 300 वर्षों से 2500 से भी अधिक जानें बचायी जा चुकी हैं। पीड़ितों को गर्मी पहुंचाने के लिये सेंट बर्नार्ड हमेशा अपने साथ ब्रांडी की छोटी सी बोतल रखता है। इनमें सबसे ज्यादा प्रसिद्ध बैरी था जिसने 1800 में अपनी मृत्यु से पहले 40 से भी अधिक व्यक्तियों को बचाया।

कुछ कुत्तों को रास्ता दिखाने व जान बचाने का प्रशिक्षण दिया जाता है और वस्तुतः वह अपने अन्धे मालिकों की आंख होते हैं। कुत्ता अपने स्वामी को भीड़ भरे रास्तों और ट्रैफिक में से ले जाता है, हमलावरों से रक्षा करता है और कभी कभी अपने मालिक का हुकुम भी नहीं मानता है यदि उसे ऐसा लगता है कि इससे उसके मालिक को खतरा पहुंचेगा।

जीवन बीमा आपका आजीवन साथी हो सकता है जो आपके हितों की ईमानदारी के साथ चौकसी व सुरक्षा करेगा। इसके बारे में और जानकारी कीजिये।

जीवन बीमा—आपके भविष्य की सुरक्षा का सबसे सुरक्षित उपाय। इसके बारे में अधिक जानिए।

भारतीय जीवन बीमा निगम

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

"विघ्नेश्वर" रंगीन धारावाही इस अंक के साथ समाप्त हो रहा है। इसकी रचना वड्डादि पापय्या ने की है। अगले अंक से रंगीन धारावाही "विष्णु की कहानी" शुरू होगी। आशा है, यह नया धारावाही भी पाठकों के लिए रोचक सिद्ध होगा।

अमर वाणी

यस्मिन जीवति जीवंति, बहवः स तु जीवतु,
काकोपि किं न कुरुते चंच्वा स्वोदर पूरणम्।

[जिसके जीवित रहने से अनेक लोगों को सुखमय जीवन उपलब्ध होता है, उसे जीवित रहना चाहिए। ऐसा न होकर जो कौए की तरह केवल अपना पेट भरना मात्र सब कुछ मानता है, उसके सौ साल जीवित रहने पर भी बेकार है।]

वर्ष : ३५ जनवरी १९८३ अंक : ५

एक प्रति : १-७५ :: वार्षिक चन्दा : २१-००

अज्ञात पिशाच

गोपाल प्रति दिन सवेरे अपने गाँव से शहर में जाता और दफ़्तर का काम समाप्त होते ही शाम को घर लौट आता। गाँव से शहर जानेवाले रास्ते में एक छोटा सा जंगल पड़ता था। एक दिन वह जंगल पार कर रहा था। पगडंडी के दोनों तरफ़ पेड़ की डालों में बंदरों का एक दल एक दम हंगामा मचा रहा था। उन्हें देखते ही गोपाल डर गया, रास्ता भटक कर जंगल में बहुत दूर चला गया। आखिर शाम हुई और चारों तरफ़ अंधेरा फैल गया।

अचानक गोपाल को एक जगह अध जला एक पेड़ पिशाच जैसा विकृत दिखाई दिया। वह पिशाचों कें नाम से बहुत डरता था। लेकिन उसने सुन रखा था कि कुछ पिशाच ऐसे भी होते हैं जो मनुष्यों की हानि नहीं करते, बल्कि उपकार भी करते हैं।

गोपाल को लगा कि विकृत लगने वाले उस ठूंठ को कोई पिशाच अपना आश्रय बनाये हुए है। इस पर वह डर गया, अपने दोनों हाथ जोड़कर बोला—"हे पिशाच, यदि तुम मेरी हानि करोगे तो इससे तुम्हारा कोई फ़ायदा होनेवाला नहीं है, अगर तुम इस गरीब को थोड़ा धन दोगे तो मैं हमेशा तुम्हारी याद करते हुए अपने दिन आराम से बिताऊँगा।"

उसकी बात पूरी होने के पहले ही पेड़ के खोखले के पास कोई आहट हुई। गोपाल ने हिम्मत के साथ पेड़ के पास पहुँच कर खोखले में झांककर देखा। उसकी आँखें चकरा गईं। खोखले में सोने के सिक्कों का ढेर लगा था।

गोपाल अंगोछे में उन सिक्कों को बांध घर की ओर चल पड़ा। दर्वाजा खटखटाते ही उसकी पत्नी किवाड़ खोलकर पूछ

मुकुल गोयल

बैठी–"क्या बात है? आज इतनी देर करके घर लौट रहे हैं?"

"यह बात मैं बाद को सुनाऊँगा। बड़ी प्यास लगी है, पहले थोड़ा पानी तो पिलाओ।" गोपाल खीझ कर बोला।

गोमती रसोई घर की ओर चल पड़ी। गोपाल मन में सोचने लगा कि औरतों के पेट में बात नहीं पचती, यों सोचते सोने के सिक्कों वाली गठरी को अटारी पर फेंक दिया और अनिच्छापूर्वक ही खाना खाया। खाट पर तो लेट गया, पर उसे नींद न आई।

पत्नी ने पूछा–"आज आप अन्य मनस्क से लगते हैं, बात क्या है?"

"कुछ नहीं, तुम चुपचाप चले जाओ और सो जाओ।" गोपाल खीझ उठा।

गोपाल कभी अपनी पत्नी को डांटता न था, आज उसके मुँह से फटकार सुनकर गोमती रो पड़ी।

सवेरा होने पर गोपाल शहर में चला गया। अपने जान-पहचान के लोगों के पास जाकर तरह-तरह के व्यापारों के बारे में दरियाफ़्त करता रहा। सब कोई उसे यही समझाने लगे कि व्यापार करने के लिए बड़ी पूंजी की जरूरत होती है। इसी चिंता में वह एक हफ़्ते तक दफ़्तर नहीं गया, आखिर इस निर्णय पर पहुँचा कि

व्यापार के लिए ज्यादा धन की आवश्यकता है।

एक दिन संध्या के समय गोपाल जंगल में गया। पिशाचवाले पेड़ के पास पहुँच कर हाथ जोड़ करके बोला–"सुनो भाई, तुमने मुझे जो धन दिया, उसके सदुपयोग करने के बारे में विचार करते मैं दफ़्तर में छुट्टी पत्र भी भेजना भूल गया जिससे मुझे नौकरी से हाथ धोना पड़ा। थोड़ा और धन देकर मुझे अपने पैरों पर आप खड़े होने लायक़ कर दो।"

यों कहकर गोपाल ने पेड़ के खोखले में झांककर देखा, इस बार उसे पहले से आधे सोने के सिक्के मात्र दिखाई दिये। उन

इसकी वजह कोई न कोई पिशाच ही होगी।"

गोपाल को कुछ न सूझा कि क्या किया जाय? आखिर इसी चिंता में वह रात भर जागता रहा। जब उसकी थोड़ी सी आंख लगी तो देखता क्या है, कमरे के भीतर कोई आहट हो रही है और उसके सामने चार पिशाच खड़े हैं।

"तुम हमारे दोस्त के यहाँ से काफ़ी धन ले आये हो। वक़्त पर वह हाज़िर नहीं हो पाया। कम से कम हमारे लिए तो बढ़िया दावत का इंतज़ाम करो।" पिशाच उत्साह में आकर बोले।

"क्या कहा? दावत देनी है? बकवास बंद करके यहाँ से चले जाओ। मेरी औरत पिशाचों के नाम से ही डरती है!" गोपाल क्रोध में आकर बोला।

यह उत्तर सुनकर पिशाच बिगड़ उठे और घर की सारी चीज़ों को उठा कर इधर-उधर फेंक दिया। बाद अटारी पर से सोने के सारे सिक्के लाकर घर के चारों तरफ़ बिखेर दिया, तब गायब हो गये। दूसरे ही क्षण वे सिक्के सांप और बिच्छू के रूप में बदल कर गोपाल पर हमला कर बैठे। इस पर घबड़ा कर गोपाल ज़ोर से चीख उठा। गोपाल की पत्नी चौंक कर उठ बैठी और बोली–

सिक्कों को भी गोपाल ने अपनी पत्नी की आंख बचाकर अटारी पर फेंक दिया।

गोपाल के मन में यह तीव्र इच्छा थी कि अब तक उसे जो सिक्के मिले हैं, उन्हें गिनकर देख ले। लेकिन उसकी पत्नी घर में थी, इस कारण उसे ऐसा करने का कभी मौक़ा न मिला। आखिर यह निर्णय कर लिया कि उस धन का हिसाब देख कोई न कोई व्यापार शुरू करना चाहिए। तब वह अपनी पत्नी से बोला–"कल तुम अपने मायके चली जाओ।"

यह आदेश सुनकर गोमती फूट-फूटकर रो पड़ी और बोली–"आपके अन्दर इधर जो बहुत बड़ा परिवर्तन दिखाई देता है,

"अजी, आपने तो कोई बुरा सपना तो नहीं देखा? ऐसा लगता है कि मेरे चले जाने पर ही आपके मन को शांति मिलेगी। मैं कल ही अपने मायके चली जाऊँगी।" यों समझा कर उसने गोपाल को पीने के लिए पानी ला दिया।

गोपाल को उस घबराहट से संभलने में थोड़ी देर लगी, पर इसके बाद उसे नींद न आई। वह सोचने लगा कि इस सारी अशांति का मूल सोने के सिक्के हैं। उन्हें फिर से पिशाच को सौंपने पर ही उसे मानसिक शांति मिलेगी।

दूसरे दिन संध्या के समय गोमती पानी लाने तालाब पर गई थी, तब अटारी पर से सिक्के लेकर गोपाल जंगल में पिशाच वाले पेड़ के पास पहुँचा।

इस बार हाथ जोड़ कर प्रणाम किये बिना ही गोपाल चिल्लाकर बोला—"हे उत्तम हृदयवाले पिशाच, ले लो, तुमने मुझे जो कुछ धन दिया, सारा का सारा वापस ले आया हूँ। मैं अच्छी तरह से यह समझ गया हूँ कि बिना मेहनत के प्राप्त होने वाले धन से कोई भी मनुष्य सुखी नहीं बन सकता।" यों कहकर सोने के सिक्कोंवाली गठरी को पेड़ के खोखले में गिरा दिया।

दूसरे ही क्षण खोखले में से पीड़ा से भरी यह पुकार सुनाई दी—"कौन है रे?"

गोपाल ने आश्चर्यपूर्वक खोखले के भीतर देखा। काला, पर मजबूत शरीर वाला एक आदमी पीड़ा के मारे सर पकड़े बैठा हुआ है।

गोपाल सोच ही रहा था कि अब क्या किया जाय? इतने में उस प्रदेश के जमीन्दार के दो नौकर उधर दौड़ते आ पहुँचे। वे पूछने लगे—"वह चीखने वाला आदमी कौन था?" फिर खोखले में झांक कर पीड़ा से कराहने वाले को देखते ही पूछ बैठे—"अबे, शेरसिंह, तुम हो? इधर तुम जमीन्दार के घर से जो धन लूट लाये हो, उसे कहाँ पर छिपा रखा है?" यों पूछते उसकी गर्दन पकड़कर बाहर खींच लाये!

उसी वक्त खोखले के पीछे वाले एक सुरंग में से एक भारी चूहा बाहर निकला और झाड़ी के भीतर भाग गया ।

गोपाल उसे देख अचरज में आ गया और जमीन्दार के नौकरों से बोला–"हाँ, अब मुझे मालूम हो गया कि अपने बिल को बंद करने वाले सोने के सिक्कों को चूहा अपने बिल के भीतर पहुँचा रहा है । मैं सोच रहा था कि यह सब किसी पिशाच की करतूत है ।"

इस पर नौकरों में से एक गुस्से में आया और गोपाल का कंधा पकड़कर झकझोरते हुए बोला–"अबे, तुम कोई मन गढ़ंत कहानी सुनाकर यहाँ से भाग जाना चाहते हो? जमीन्दार साहब के खजाने को लूटकर तुम और इस शेरसिंह ने इस खोखले में छिपा रखा है! चलो, जमीन्दार के पास!"

उसी समय जमीन्दार के नौकरों ने पेड़ के खोखले में ढूंढा, उन्हें सोने के साथ कुछ कीमती आभूषण भी हाथ लगे । इसके बाद वे शेरसिंह और गोपाल को जमीन्दार के पास खींच ले गये ।

जमीन्दार ने उस नामी लुटेरे शेरसिंह को कारागार में भिजवा दिया, और गोपाल से पूछ-ताछ करने पर उसने सारा वृत्तांत सुनाया ।

"सुनो गोपाल, तुम्हारी वजह से ही मेरा खोया हुआ सारा धन हाथ लग गया है । इसलिए इस धन में से तुम जो कुछ लेना चाहते हो, ले लो ।" जमीन्दार बोला ।

इसके उत्तर में गोपाल जमीन्दार से बोला–"हर एक आदमी के अन्दर धन को लालच नामक एक अज्ञात पिशाच होता है । इस अनुभव के द्वारा मैंने यह जान लिया है कि उस पिशाच को कैसे नियंत्रण में रखना है । आप कृपया मुझे कोई नौकरी दिलाइये! बस, मैं यही चाहता हूँ ।"

यह उत्तर सुनकर जमीन्दार बड़ा खुश हुआ । गोपाल को अपनी कचहरी में मुंशी की नौकरी दी ।

[१४]

[शिवदत्त और मंदरदेव की नौकाएँ रात के वक्त किसी द्वीप में पहुँचीं । कहीं से अचानक आकर एक पत्थर एक सैनिक को लगा । मंदरदेव ने उस दिशा में एक तीर छोड़ा । दूसरे ही क्षण विकृत पुकार सुनाई दी । सबेरे सूरज की रोशनी में उस प्रदेश में वृक्षों के पत्तों पर खून के लाल-लाल धब्बे दिखाई दिये । बाद...]

शिवदत्त और मंदर देव के साथ सैनिक भी पत्तों पर खून के लाल-लाल धब्बे देख चकित रह गये । इसके बाद सब लोग समझ गये कि रात को जो विकृत कंठ ध्वनि सुनाई दी, वह जरूर किसी मनुष्य की ही होगी ।

"यह मनुष्य का खून है, इस में कोई शक नहीं है । मेरे अनुमान के मुताबिक़ वह व्यक्ति घायल हो गया है, लेकिन मरा नहीं । इस में भी कोई शक नहीं कि वह यहाँ से अपनी जान बचाकर भाग गया होगा । इस प्रदेश के चारों तरफ़ जाँच करके देखेंगे ।" शिवदत्त ने उन की जाँच करके देखते हुए कहा ।

इस के बाद मंदर देव तथा तीन सैनिक एक तरफ़ तथा शिवदत्त और बाक़ी तीन सैनिक दूसरी दिशा में चल पड़े । मंदर देव थोड़ी दूर आगे बढ़ा ही था कि सामने वाली

झाड़ी में किसी के हिलने की आहट सुनाई दी। उसे लगा कि वह जिस दुश्मन की खोज कर रहा है, मानो वह हाथ लग गया हो। वह तेजी के साथ आगे की ओर कूद पड़ा। मगर वह आहट करने वाला प्राणी आदमी न था, एक जंगली सुअर था। वह चिल्लाते हुए मंदर देव को अपने दाढ़ों से चीरने के लिए झाड़ियों में से बाहर कूद पड़ा। मंदरदेव चकित रह गया, पर उसके दाढ़ों से अपने को बचा कर उस सुअर पर तलवार भोंक दी। चोट खाकर सुअर घायल हो गया, फिर भी वह चिल्लाते हुए पीछे मुड़ कर उस पर कूद पड़ा। इस बीच मंदरदेव के साथ आये हुए सैनिकों ने उस पर भाले चलाये, तब वह चीत्कार करते बगल की ओर लुढ़क पड़ा और छटपटाने लगा।

इतने में शिवदत्त अपने सैनिकों के साथ दौड़ते हुए वहाँ आ पहुँचा। उसे घायल होकर छटपटाने वाला जंगली सुअर तथा उसके बाजू में खड़े मंदर देव भी दिखाई दिये। शिवदत्त मुस्कुराते हुए बोला– "आपकी चिल्लाहट सुन कर मैं ने सोचा कि कोई खतरा पैदा हो गया है, इसलिए मैं दौड़े-दौड़े आ पहुँचा।"

"अनायास ही हमें आहार मिल गया है; रात को हम पर पत्थर फेंकने वाले दुश्मन का पता बाद को लगा सकते हैं। सबसे पहले भूख मिटाना जरूरी है।" मंदरदेव ने कहा।

सैनिक सूखी लकड़ियाँ लाने चारों तरफ़ चले गये। मंदर देव और शिवदत्त आग जला कर लपटें पैदा कर रहे थे, इतने में दूर से कान के पर्दों को फोड़ने वाला भयंकर आर्तनाद सुनाई दिया।

अस आवाज़ को सुनते ही शिवदत्त और मंदर देव एक ही छलांग में उठ खड़े हुए, और तलवार खींच कर आर्तनाद की दिशा में दौड़ पड़े। थोड़ी दूर जाने पर उनकी आँखों में जो दृश्य दिखाई दिया, उसे देख वे दोनों एक दम भय और विस्मय में आ गये।

इस बीच "नरवानर" "नरवानर" चिल्लाते कुछ सैनिक उस ओर दौड़ते हुए आ पहुँचे।

दर असल बात यों हुई कि सूखी लकड़ियाँ बीनने वाले एक सैनिक के कंठ को अचानक पीछे से दो तगड़े हाथों ने इस तरह कस लिया जिससे भय कंपित हो वह सैनिक सारी ताक़त लगा कर चिल्ला उठा।

"इस में शक नहीं कि यह एक नर वानर है।" यों कहते मंदर देव उस विकृत आकृति वाले पर तलवार भोंकने आगे बढ़ा, इतने में मंदर देव को सावधान करते हुए शिवदत्त जोर से पुकार उठा–"मंदरदेव, ठहर जाइये।" इस बीच सैनिक के कंठ को कसने वाले विकृत व्यक्ति ने पीछे मुड़कर देखा और भागने की कोशिश करने लगा। उसी वक़्त तीन सैनिक उस पर हमला

कर बैठे और उस के साथ जूझ कर आखिर जंगली बेलों से उस को बांध पाये ।

"यह नर बानर नहीं; सौ फ़ी सदी मानव प्राणी है! दुर्भाग्यवश यह इस बुरी हालत को पहुँचा है ।" शिवदत्त ने स्पष्ट शब्दों में कहा ।

उसी समय एक सैनिक ने विस्मय पूर्ण दृष्टि प्रसारित कर कहा–"शिवदत्त जी, आप सावधानी से देखिये, इस नरवानर के दायें हाथ पर बहुत बड़ा घाव हो गया है और उस घाव से बहुत सारा खून निकल रहा है ।"

मंदर देव ने झुक कर उस विकृत आकृति वाले प्राणी के हाथ की जाँच करके कहा–"शिवदत्त, रात को हम पर पत्थर फेंकने वाला प्राणी यही है । लो, देखो । मेरा तीर यहां पर इस के हाथ पर लगा है । तुम्हारे कहे मुताबिक़ यह नरवानर नहीं, नर ही है ।"

वह विकृत व्यक्ति पीड़ा के मारे कराहते हुए बोला–"मैं भी आप लोगों जैसे एक मानव हूँ । इस भयंकर देश में बारह साल अकेले बिता कर मैं इस तरह विकृत रूप को प्राप्त हो गया हूँ ।"

"तुम्हारा नाम क्या है ? बारह वर्ष अकेले इस टापू में बिताने की तुम्हारी यह बुरी हालत क्यों हो गई ?" शिवदत्त ने पूछा ।

शिवदत्त का सवाल सुन कर वह विकृत आकृति वाला किसी बात की याद करने का अभिनय करते थोड़ी देर मौन रहा, तब इतमीनान से बोला–"महाशय, मेरा नाम वज्रमुष्ठि है; मैं शमन द्वीप का निवासी हूँ । जब मैं अट्ठारह साल का हो गया, तब से मैं समुद्रकेतु नामक एक क्रूर दस्यु नेता के अधीन काम करने लगा । समुद्र पर यात्रा करने वाली व्यापारी नौकाओं और समुद्र तट के गांवों को भी लूटना हमारा काम था । थोड़े समय बाद मेरे नेता समुद्रकेतु और मेरे बीच किसी बात को लेकर झगड़ा हुआ, इस का नतीजा यह

हुआ कि वह मुझे इस टापू में अकेले छोड़ कर अपने रास्ते चला गया।

"क्या तुम शमन द्वीप के निवासी हो?" यों सवाल करते वज्रमुष्ठि की बातों पर शिवदत्त बिस्मय में आ गया। शमन द्वीप का नाम सुनते ही शिवदत्त को शाक्तेय के समाचार के साथ उस के द्वारा चण्डीदेवी के लिए सोने व चांदी से मंदिर बनाने के हेतु अन्य राज्यों पर हमला करने की बात याद हो आई। शिवदत्त ने सोचा कि शमन द्वीप का पता लगाने तथा इस वक़्त उस के राजा का समाचार इत्यादि बातें जानने के लिए वज्रमुष्ठि उसकी सहायता कर सकता है। मगर उस के दिमाग म तुरंत यह बात आई कि ये सारे समाचार जानने का यह उचित समय नहीं है। फिलहाल वह जिस टापू में है, उस की हालत जान लेना जरूरी है।

इस विचार से शिवदत्त ने वज्रमुष्ठि से पूछा—"वज्रमुष्ठि, तुम इस टापू में बारह साल से रहते हो न? मैं समझता हूँ कि तुम यहाँ की जनता और उनके आचार-व्यवहारों की बाबत बहुत सारी बातें जानते होंगे?"

वज्रमुष्ठि ने निराशा पूर्वक सर हिलाकर कहा—"महानुभाव, मैं इतने सालों से यहाँ जरूर रहता हूँ, लेकिन मैं इस टापू के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं रखता। क्योंकि मेरा सारा समय आहार के संपादन करने और यहाँ के खूंख्वार जानवरों से अपनी जान बचाने में ही बीत गया है। हाँ, यह बात सही है कि एक-दो बार समुद्रकेतु के दस्युओं को इस समुद्र के किनारे से गुजरते हुए मैं ने देखा है। इस से बढ़ कर मैं इस द्वीप के बारे में कुछ नहीं जानता।"
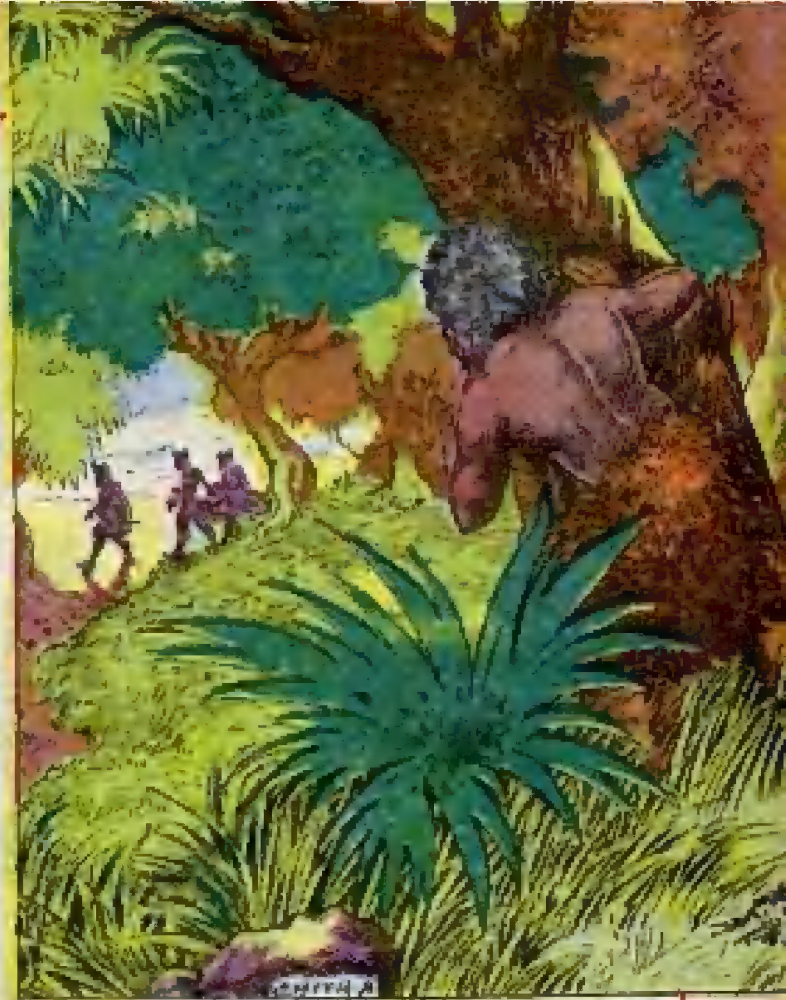
"क्या इस टापू में तुम्हें कोई मानव मात्र दिखाई नहीं दिया?" शिवदत्त ने आश्चर्यपूर्वक पूछा।

वज्रमुष्ठि किसी बात की याद करने वाले जैसे सर हिला कर बोला—"इन बारह सालों के दौरान में मैं ने सिर्फ़ चार-पाँच बार मनुष्यों को जरूर देखा है।

गरमी से बचने के लिए हमें छोटी छोटी कुटियाँ बनानी होंगी।"

शिवदत्त ने स्वीकृति सूचक सर हिलाया। इस के बाद सैनिकों की ओर मुड़ कर वज्रमुष्ठि के बंधनों को खोलने का आदेश दिया। बंधनों से मुक्त होते ही वज्रमुष्ठि शिवदत्त और मंदर देव को प्रणाम करके बोला--"महानुभाव, मुझको भी आप अपने अनुचरों में शामिल कीजियेगा। मैं आप का विश्वास पात्र बने रह कर आप लोगों की सेवा करूँगा। आप मुझ पर संदेह न कीजियेगा।"

इस पर शिवदत्त ने अपने अनुचरों की ओर सार्थक दृष्टि से देखा। उन सब ने स्वीकृति सूचक अपने अपने हाथ उठाये, पर उनमें से दो-तीन सैनिकों ने वज्रमुष्ठि के समीप जाकर स्नेह पूर्वक उसके कंधे पर थप थपाया।

"सब से पहले हमें अपनी भूख मिटानी है। इस के बाद ही आसपास के प्रदेशों की हालत जानने की कोशिश करेंगे।" मंदरदेव ने सुझाया।

शिवदत्त ने सर हिला कर अपनी स्वीकृति दी। सैनिकों ने सूखी लकड़ियों को एक जगह जमा करके उन में आग सुलगाई। मरे हुए जंगली सुअर को उठा लाकर सैनिकों ने लपटों पर डाल

वे तो आजानुबाहू थे और तिसपर शिकारी थे। वे अपने सरों पर बड़े सींग धारण किये हुए थे। मगर वे लोग यहाँ कहीं आसपास में नहीं बसते। शिकार खेलकर यहाँ से कहीं चले जाते हैं।"

शिवदत्त ने मंदर देव की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखा। मंदर देव हँस कर बोला--"शिवदत्त, फिलहाल हमें इस टापू में किसी न किसी तरह अपने दिन काटना ही पड़ेगा। इसलिए आस पास के प्रदेशों में घूम-घाम कर हमें इस बात का पता लगाना मुनासिब होगा कि हम किस प्रकार के प्रदेश में पहुँच गये हैं। अंधेरा फैलने के पहले ही यह काम समाप्त करके वर्षा और

दिया। वज्रमुष्ठि थोड़ी देर तक जलने वाले उस जंगली सुअर की ओर नजर डाले रहा, तब बोला–"महानुभाव, मैं समझता हूं कि यह अकेला जानवर हम सब की भूख मिटा नहीं सकता। अगर आप अनुमति दें तो मैं चार-पाँच मिनटों में किसी और जानवर को पकड़ ला सकता हूं।"

मंदरदेव और शिवदत्त ने वज्रमुष्ठि को अनुमति दी। इस के बाद वज्रमुष्ठि के साथ दो सैनिक तीर और कमान लेकर चल पड़े। जंगल में थोड़ी दूर आगे बढ़ने पर उन्हें एक जगह चार-पाँच हिरण घास चरते दिखाई दिये। सैनिकों ने कमान पर तीर चढ़ाये। इस पर वज्रमुष्ठि उन को रोकते हुए बोला–"इन छोटे जानवरों को पकड़ने के लिए तुम लोग अपने तीर और कमान खर्च मत करो। तुम दोनों यहीं पर रह जाओ; मैं अभी चल कर दो-चार जानवरों को पकड़ लाता हूं।" यों बताकर वज्रमुष्ठि घने वृक्षों और झाड़ियों की ओर दबे पाँव चल पड़ा।

सैनिक भी चुपचाप वज्रमुष्ठि के पीछे चलने लगे। वज्रमुष्ठि दबे पाँव चलते थोड़ी दूर बढ़ा, हिरणों के समीप में स्थित पेड़ों पर बिल्ली की तरह रेंग गया। सैनिकों की समझ में न आया कि वह क्या

करने जा रहा है, इसलिए वे दोनों विस्मय पूर्वक उस दृश्य को देखते रह गये। वज्रमुष्ठि हिरणों के ऊपर फैली डालों पर साँप की तरह रेंगता गया और अचानक वहाँ से हिरणों पर कूद पड़ा।

झपकी लेने की देर में हिरण उछल कर कूद पड़े। पर उनमें से एक वज्रमुष्ठि के बलवान हाथों में फँस कर भागने की व्यर्थ कोशिश करने लगा। अपने हाथों में फँसे हिरण को वज्रमुष्ठि बड़ी आसानी से अपने कंधे पर डाल कर सैनिकों से बोला–"गत बारह सालों में मेरा आहार-संपादन इसी प्रकार हुआ है। तीर और भालों का प्रयोग करने केलिए मेरे पास वे हथियार

नहीं थे। एक-दो बार बाघ और भालू से भी खाली हाथों से लड़ कर मैं अपनी जान बचा पाया हूँ।"

वज्रमुष्ठि के शारीरिक बल-प्रदर्शन और उसकी अक्लमंदी को देख सैनिक अचरज में आ गये। पहले वे कल्पना भी नहीं कर पाये कि लगभग पाँच फुट ऊँचे, नाटे पैर और नाटे हाथों के भीतर ऐसी ताक़त भी हो सकती है।

थोड़ी देर में वे सब शिवदत्त के पास पहुँचे। सैनिकों के मुँह से वज्रमुष्ठि के द्वारा हिरणों को फँसाने का तरीक़ा जान कर शिवदत्त भी विस्मय में आ गया।

ये बातें सुन शिवदत्त अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ, वज्रमुष्ठि के समीप जाकर उस के कंधे पर थपकी देते हुए बोला--"मैं समझता हूँ कि तुम हमारी क़िस्मत की वजह से ही हमारे अनुचर के रूप में प्राप्त हो गये हो। समुद्रकेतु ने तुम्हारे साथ जैसा विश्वासघात किया है, वैसे नर वाहनमित्र ने भी मेरे साथ किया है। हम दोनों को इन लोगों के साथ बदला लेने के वास्ते ही सही जरूर जीना है। मैं समझता हूँ कि यदि हमारे संकल्प दृढ़ हैं कि तो निश्चय ही हमें सफलता हाथ लगेगी।"

"मंदर देव के कथनानुसार तुम हमारे अनुचर बनने योग्य हो। मैं समझता हूँ कि इस टापू में अगर हमें किन्हीं खतरों का सामना करना पड़े तो तुम हमारे साथ रह कर हमारी मदद पहुँचाओगे। मेरा विश्वास है कि तुमको बारह वर्ष तक इस भयंकर द्वीप का प्रवासी बनाने वाले समुद्री दस्यु समुद्रकेतु के साथ तुम जरूर बदला ले सकोगे।" शिवदत्त ने कहा।

"महाशय, मैं भी इस के इंतजार में हूँ।" यों वज्रमुष्ठि बता ही रहा था कि उसकी बात पूरी होने के पहले समुद्र के तट की ओर से विकृत पुकार व चिल्लाहटें सुनाई दीं। सब लोगों ने आश्चर्य में आकर उस ओर अपने सर घुमाये।

(और है।)

सच्चा पहरेदार

दृढ़व्रती विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ पर से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने पूछा–" राजन, मनुष्य में अगर सहनशीलता और लगन के साथ विवेक शीलता न हो तो वह जिंदगी में जो कुछ साधता है, उसे बनाये नहीं रख सकेगा। उसका फ़ायदा दूसरे लोग उठायेंगे। इस आधी रात के वक़्त आप को इतनी सारी मुसीबतों का शिकार बनाने वाला अगर आप से भी ज्यादा बुद्धिमान हो तो आप भी वज्रपुरी के राजा जैसे जरूर नुक़सान उठायेंगे। मैं आपको उसकी कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनिये।"

बेताल कहानी सुनाने लगा–" वज्रपुरी का चन्द्रसेन देशाटन करते एक दिन रात के

बेताल कथाएं

वक़्त एक छोटे से गाँव पहुँचा। गाँव के सारे लोग सो रहे थे। राजा एक मकान के पास पहुँच कर किवाड़ खटखटाने को हुआ। तब राजा को यह स्वर सुनाई दिया—"तुम कोई परदेशी जैसे मालूम होते हो। तुम क्यों वह किवाड़ खटखटाते हो?"

राजा ने मुड़कर देखा। कोई पच्चीस साल का युवक राजा की ओर परख कर देख रहा था। राजा ने उस युवक से पूछा—"तुम कौन हो?"

"मैं रात के वक़्त इस गाँव का पहरा देता हूँ। मेरे मन में संदेह हुआ कि आप परदेशी हैं या चोर? यदि आप परदेशी हैं तो मैं आपको पहले ही चेतावनी देना चाहता हूँ।" पहरेदार ने कहा।

"बताओ, वह क्या है?" राजा ने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

"इस मकान का मालिक अव्वल दर्जे का कंजूस है! आज रात को यह आप को मुफ्त में आश्रय न देगा। लेकिन परदेशियों को आश्रय देने वाले इस गाँव में बहुत-से लोग हैं! यही बात मैं आप को सुनाना चाहता था।" पहरेदार ने कहा।

राजा के मन में उस कंजूस के बारे में सच्ची बात जानने की जिज्ञासा पैदा हुई। उन्होंने कंजूस का दर्वाजा खटखटाया। दूसरे ही क्षण अंदर से आवाज सुनाई दी—"अभी आता हूँ।"

राजा के मन में यह शंका पैदा हुई कि आधी रात के वक़्त दर्वाजा खटखटाते ही दर्वाजा खोलने वाला आदमी कंजूस कैसे हो सकता है?

राजा ने बड़ी नम्रतापूर्वक कहा—"मैंने सुना है कि आप बड़े दयालू हैं। मैं एक परदेशी हूँ। आज रात को मुझे आप अपने घर में आश्रय दीजिए!"

"आपने मेरे बारे में गलत सुना है! मेरे अन्दर दया की भावना बिलकुल नहीं है! मैं परदेशियों को कभी आश्रय नहीं देता हूँ।" कंजूस ने साफ़ कह दिया।

"सबने मुझे यही बताया कि अतिथियों को आश्रय देने के लिए आप रात-दिन इंतज़ार करते रहते हैं। इसका सबूत यह है कि मेरे दर्वाजा खटखटाते ही आपने दर्वाजा खोल दिया।" राजा बोले।

"ओह, यह बात है! मेरा धन कोई चोर-डाकू या बदमाश उठाकर ले जाएगा, इस डर से मुझे रात-दिन नींद नहीं आती। इसीलिए आपके द्वारा दर्वाजा खटखटाते ही मुझे वह आवाज़ झट सुनाई दी। बार-बार दर्वाजे खटखटाने पर वे घिस कर कमजोर हो जाते हैं! अब आप जा सकते हैं।" कंजूस ने कहा।

"इस आधी रात के वक़्त में कहाँ जाऊँ? पैसे लेकर ही सही, मुझे आश्रय दो।" यों कहकर राजा ने कंजूस को सोने का एक सिक्का दिखाया।

सोने का सिक्का लेकर कंजूस ने राजा के लिए एक अच्छे बिस्तर का इंतजाम किया। दूसरे दिन कंजूस के जीने का तरीका देखने पर राजा को बड़ा दुःख हुआ।

कंजूस के घर के पिछवाड़े में फलों के पेड़ हैं। उसके यहाँ दो गायें और दो भैंसें हैं। रसोई से लेकर घर के सारे काम-काज वह अकेले खुद करता है।

वह अपना धन ब्याज पर देता है! फल और दूध बेच देता है। पल-भर भी आराम किये बिना मेहनत करता है! रात को इस डर से सोता तक नहीं कि न मालूम उसकी संपत्ति का क्या होगा।

राजा के मन में यह इच्छा हुई कि कम से कम एक जून उसे भर पेट खाना खाते हुए देख ले। उन्होंने कंजूस के हाथ में सोने का एक सिक्का देकर कहा—"तुम दो आदमियों के वास्ते बढ़िया दावत का इंतजाम करो।" कंजूस ने अचरज में आकर पूछा—"दो आदमी कौन हैं?"

"तुम और मैं! मैं राजवंशी हूँ, कभी अकेले खाना नहीं खाता।" राजा ने जवाब दिया।

रात को दावत का बढ़िया इंतजाम हुआ, लेकिन कंजूस ने राजा के साथ भोजन
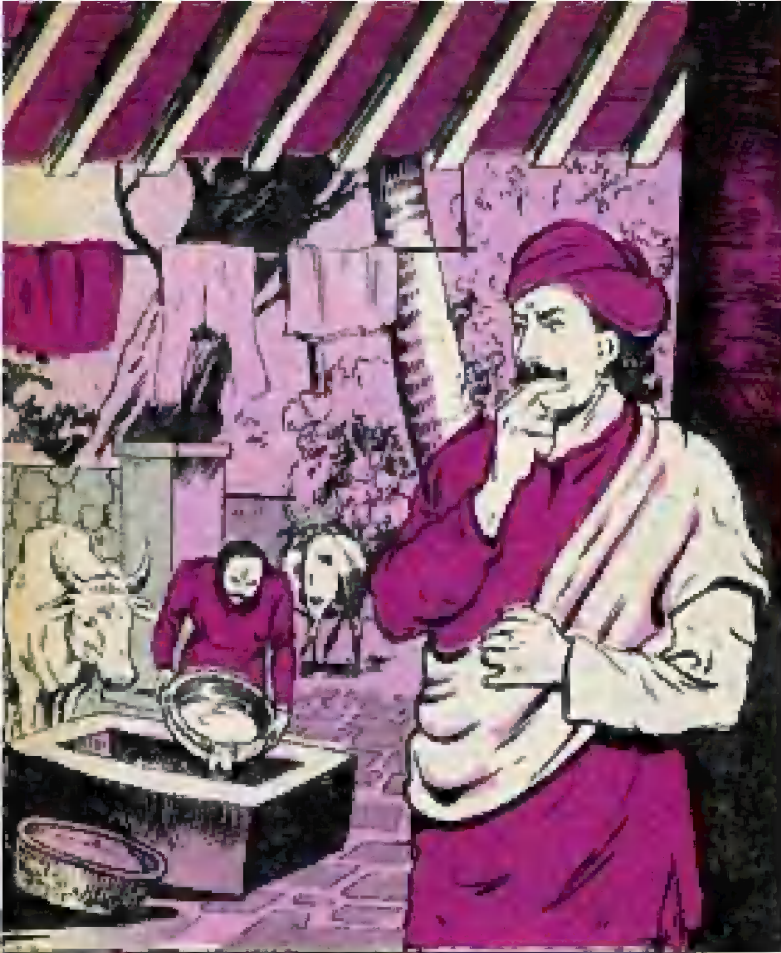
नहीं किया । उसने एक और परदेशी के हाथ से धन लिया और उसको दावत खाने बुलवा लाया ।

भोजन के बाद राजा ने कंजूस से पूछा– "हम दोनों ने साथ बैठकर भोजन करना चाहा, लेकिन तुम किसी दूसरे को बुला लाये, क्या बात है ?"

"भर पेट खाने से गहरी नींद आयेगी । सो जाने पर मेरी संपत्ति लुट जाएगी ।" कंजूस ने जवाब दिया ।

राजा अचरज में आकर बोले–"मैंने आज तक तुम जैसे आदमी को न देखा । मैं इस देश का राजा हूँ । तुम मेरे साथ राजधानी में चलो । अगर यह साबित हो जाय कि तुम से बढ़कर कोई कंजूस नहीं है, तब मैं इस वक़्त तुम्हारी जो संपत्ति है, उसके दुगुनी संपत्ति मैं तुम्हें दूँगा ।"

धन के लोभ में पड़कर कंजूस ने राजा के साथ राजधानी जाने के लिए मान लिया । इस पर राजा ने गाँव के मुखिये को बुलवा कर अपना परिचय दिया और कंजूस के घर के लिए कड़े पहरे का इनज़ाम कराया । तब वे कंजूस को साथ ले राजधानी में पहुँचे ।

राजा ने मंत्री को कंजूस की कहानी सुनाई और उसे बताया कि वे कंजूसों की प्रतियोगिता का इंतज़ाम करना चाहते हैं ।

मंत्री ने कहा–"महाराज, इस प्रतियोगिता के द्वारा कोई प्रयोजन सिद्ध न होगा । आखिर मनोरंजन की भी एक सीमा होती है न ?"

राजा ने समझाया–"इस प्रतियोगिता के समाप्त होने पर इसकी उपयोगिता का फल दिखाई देगा ।"

मंत्री ने एक हफ़्ते के अन्दर कुछ कंजूसों को इकट्ठा किया ।

प्रतियोगिता यह थी कि कंजूसों में से कोई एक आगे आकर दूसरे कंजूस से दान मांगेगा । वह धन राजा कंजूस के हाथ देगा । इसके बाद शर्त यह रहेगी कि कंजूस उत धन को दान कर सकता है

या पच्चीस कोड़े की मार खाकर उस धन को वह खुद रख सकता है। कंजूस से दान मांग कर भी जो बदक़िस्मतवर दान न पा सकेगा, उसे कोड़े के एक मार की सज़ा दी जाएगी।

कई कंजूस लोग राजा के द्वारा प्राप्त धन को खुद रखकर कोड़े की मार खाने को तैयार हो गये। पर कुछ कंजूसों ने पाँच-छे मार खाने के बाद सहन न करने की हालत में उस धन को दान कर डाला। अंत में गाँव से राजा के द्वारा अपने साथ लाये हुए कंजूस की बारी आई। उससे दान माँगने को कोई भी कंजूस आगे न आया।

राजा ने उन लोगों की ओर अचरज के साथ नज़र डाल कर पूछा-"अब तक इस प्रतियोगिता में भाग लेनेवाले हर एक ने थोड़ा-बहुत लाभ उठाया है। अब सिर्फ़ एक ही बच गया है, उससे दान माँग लो।"

इस पर सभी कंजूसों ने एक स्वर में कहा-"महाराज, इस आदमी का चेहरा देखने पर इस बात का पता चल जाता है कि भले ही इस की जान चली जाय, यह आदमी दान न देगा। दान माँग कर भी नकारात्मक जवाब पाने पर हमें भी कोड़े की एक मार खानी पड़ेगी।"

इस पर राजा ने अपने साथ लाये हुए कंजूस को सच्चे व अव्वल दर्जे का कंजूस ठहराया, तब उसे एक बहुत बड़े महल के अन्दर ले गया। उसमें राजवंश से संबंधित कई पुरानी चीज़ें थीं। संगमरमर की मूर्तियाँ, वज्र, वैडूर्य आदि रत्न खचित क़ीमती तलवारें, सोने के धागों से बुने वस्त्र तथा सोने व चाँदी के बर्तन भी थे।

उन वस्तुओं को देख कंजूस बिस्मय में आ गया! राजा ने पूछा-"मैं तुम्हें यह महल दे देता हूँ। यहीं रह जाओगे?"

राजा के मुँह से ये बातें सुनकर कंजूस चकित रह गया, फिर संभल कर बोला-

"महाराज, इससे बढ़कर महान भाग्य और हो सकता है? लेकिन मेरी सारी जायदाद गाँव में जो रह गई है!"

"तो भी क्या हुआ? तुम्हारी सारी जायदाद सोने में बदल कर इस महल में पहुँचवा दूंगा!" राजा ने जवाब दिया।

कंजूस ने खुशी से मान लिया। इस पर राजा ने उसके वास्ते मुफ्त में भोजन का भी उचित इंतजाम किया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा– "राजन, वज्रपुरी के राजा चन्द्रसेन से बढ़कर कोई मूर्ख इस दुनिया में रह सकता है? कई पीढ़ियों से उनके पूर्वजों ने जो भारी संपत्ति जमा कर रखी थी, उसे एक कंजूस के हाथ में सौंपना कैसी मूर्खता है? ऐसे राजा शासन करने योग्य कैसे हो सकते हैं? इस संदेह का समाधान जान कर भी न दोगे तो तुम्हारा सर फट कर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने यों जवाब दिया– "तुम्हारे विचार के अनुसार राजा चन्द्रसेन कोई मूर्ख नहीं हैं। उन्होंने एक योजना बनाकर कंजूस को राजधानी में लाकर उसकी परीक्षा ली, तब जान लिया कि वह एक अव्वल दर्जे का कंजूस है। एक कंजूस की नजर में धन ही उसका सर्वस्व होता है। वह और प्रकार के सुखों की आशा नहीं करता। वह धन का पहरा देगा। भूल से भी धन खर्च नहीं करेगा। वैसे राजा के पूर्वजों के द्वारा अर्जित संपत्ति को हड़पने के लिए कई लोग प्रयत्न करते होंगे। उन लोगों के द्वारा धन को बचाना है तो एक विश्वासपात्र पहरेदार की बड़ी ज़रूरत है। राजा ने समझ लिया कि इस काम के वास्ते अपने साथ लाया हुआ कंजूस ही सब तरह से लायक़ है। कंजूस यह सोच सकता है कि वही उस महल का हक़दार है, मगर दर असल वह उसका पहरेदार मात्र है!"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)
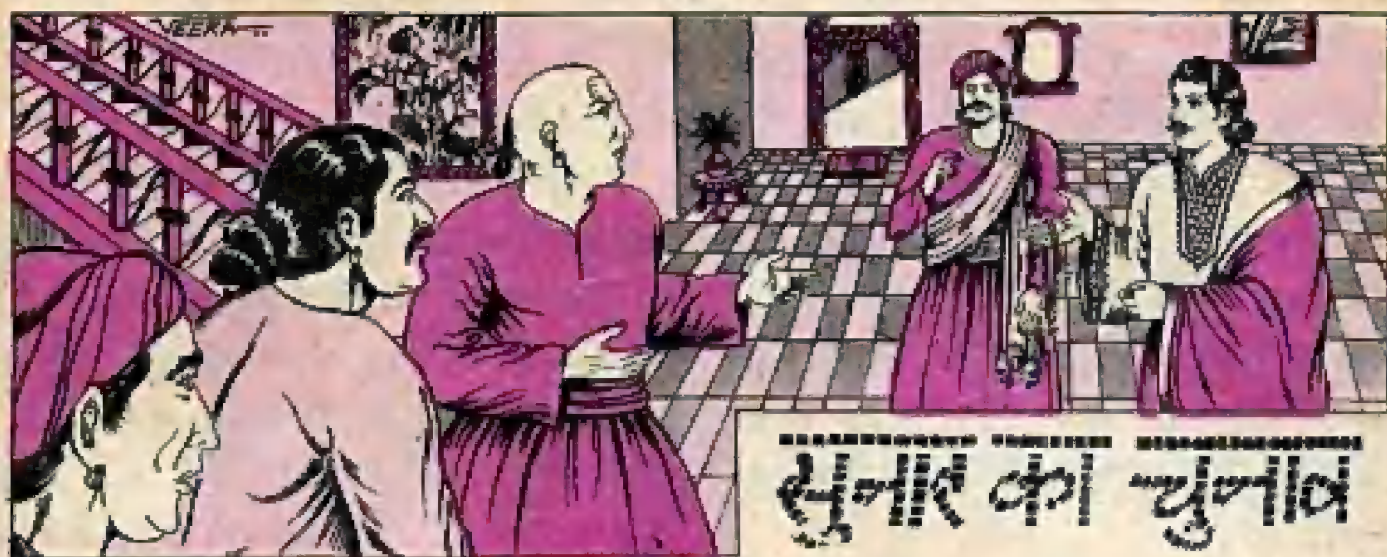
सुनार का चुनाव

आनंदपुर के जमीन्दार जगन्नाथ ने अपनी दूसरी पुत्री सुंदरी का विवाह वैभवपूर्वक मनाना चाहा। इस वास्ते सुंदरी के लिए कई तरह के नमूने वाले सुंदर व आकर्षक गहने बनवाने का निश्चय किया और गहने गढने के लिए एक विश्वासपात्र सुनार को बुलवाने का राजा ने मंत्री को आदेश दिया।

इसके कुछ साल पहले जमीन्दार ने जब अपनी बड़ी बेटी मालती के लिए जो गहने बनवाये थे उनमें सुनार ने मिलावट करके नकली गहने लाकर दिये थे। यह बात कई दिन गुजर जाने के बाद ही जमीन्दार को मालूम हो गई थी। इसलिए इस बार जमीन्दार ऐसे दगेबाजों से बचना चाहते थे।

जब सुंदरी की शादी की बात सब जगह फैल गई तब सुनार लोग आपस में होड़ लगा कर गहने बनाकर देने की प्रार्थना करते हुए उनके सामने आये। लेकिन मंत्री अच्छी तरह से जानते थे कि उनमें से ज्यादा तर लोग दगेबाज हैं। इसलिए उन सबको निराश करके मंत्री ने वापस भेज दिया।

आनंदपुर में उस वर्ष नये ढंग से सोनार का पेशा शुरू करनेवाले तीन लोग थे। उनके नाम वरदाचारी, कैलाश और कार्तिकेय थे। मंत्री ने उन तीनों में से किसी एक के हाथ गहने गढने का काम सौंपना चाहा। उनकी कारीगरी के बारे में कई दरबारी कर्मचारियों ने मंत्री के सामने बड़ी तारीफ़ की थी।

मंत्री ने उन तीनों कारीगरों को बुला भेजा, उन्हें मालती के गहनों में से हर एक को एक एक पुराना गहना देकर उनके खरेपन की जांच करके खबर देने का

महेश नारायण

आदेश दिया। दूसरे दिन तीनों सुनार मंत्री से मिलने आये, उस वक़्त जमींन्दार भी वहीं पर थे।

वरदाचारी जो गहना अपने साथ ले गया था, उसे मंत्री के हाथ सौंप कर बोला—"श्रीमान, न मालूम किसने यह गहना गढ़ा है, इसमें दो हिस्से तांबा मिलाया है, खरा सोना सिर्फ़ एक ही हिस्सा है।"

कैलाश अपने हाथ सौंपे गहने को मंत्री के हाथ सौंप कर बोला—"महानुभाव, इस गहने को गढ़नेवाला पक्का दगाबाज है। इसमें एक हिस्सा तांबा और एक हिस्सा पीतल मिलाया गया है। बचा हुआ एक हिस्सा मात्र खरा सोना है।"

कार्तिकेय ने अपने हाथ सौंपे गहने को मंत्री के हाथ लौटाते हुए कहा—"महानुभाव, इसमें एक हिस्सा मात्र खरा सोना है। बाक़ी तीन हिस्से मिलावट है।"

इसके बाद मंत्री ने तीनों को वापस भेज दिया, तब जमीन्दार से बोला—"हुजूर, आप बिना संकोच किये यह काम कार्तिकेय को सौंप दीजिये।"

जमीन्दार ने आश्चर्य में आकर पूछा—"आपने कैसे पता लगाया कि उन तीनों में से कार्तिकेय ज्यादा ईमानदार है?"

मंत्री ने समझाया—"वरदाचारी और कैलाश की सोने में मिलावट करने की आदत है। इसीलिए उन दोनों ने सबसे पहले गहनों में मिलाये जानेवाली और धातुओं की बात बताकर इसके बाद ही खरे सोने की खबर बताई। लेकिन कार्तिकेय के अन्दर धोखा देने की ऐसी प्रवृति बिलकुल नहीं है। उसने पहले गहने के खरे सोने की बात बताई और बाद को और धातुओं का समाचार दिया। इसके आधार पर मेरे मन में यह विश्वास जम गया कि कार्तिकेय ज्यादा विश्वासपात्र और ईमानदार है।"

इस पर जमीन्दार जगन्नाथ ने अपने मंत्री की बुद्धिमत्ता पर खुश होकर अपनी पुत्री के लिए गहने बनाने का काम कार्तिकेय को सौंप दिया।

ईर्ष्या का फल

गंगापुर में सूरजभानु और चन्द्रभानु नामक दो युवक थे। सूरजभानु के जंगल के समीप चार एकड़ जमीन थी। वह खेतीबाड़ी करते अपना वक़्त बिता देता था; लेकिन चन्द्रभानु के लिए कोई जमीन-जायदाद न थी। वह जंगल में मिलने वाली अन्य चीज़ों के साथ लकड़ी काट लाता और गाँव में बेच कर अपना पेट पालता था।

सूरजभानु और चन्द्रभानु दोनों लाठी चलाने और बल-प्रदर्शन में आसपास के गांवों में बड़े ही मशहूर थे। दशहरे के उत्सवों में ऐसे प्रदर्शन हर साल हुआ करते थे। उन में चन्द्रभानु हर साल प्रथम निकलता और सूरजभानु द्वितीय स्थान प्राप्त कर लेता था। विजयी चन्द्रभानु को पुरस्कार तो मिल जाता और साथ ही उसका सम्मान भी होता।

इस कारण सूरजभानु अपने साथी चन्द्रभानु से मन ही मन ईर्ष्या करने लगा। धीरे-धीरे यह ईर्ष्या यहाँ तक बढ़ी कि सूरजभानु ने चन्द्रभानु का अंत करने का निश्चय किया।

एक बार एक साधु ने दक्षिण से काशी जाते हुए सूरजभानु के खेत के पास के जंगल में एक पेड़ के नीचे चार दिनों के लिए अपना निवास बनाया। इस पर सूरजभानु ने सोचा कि साधू-संत अपनी कोई न कोई महिमा रखते हैं। इस विचार से सूरजभानु साधू को श्रद्धापूर्वक फल वगैरह समर्पित करते हुए बहुत जल्द ही उसकी कृपा का पात्र बना।

साधू ने थोड़े दिन वहाँ पर बिताये, फिर वहाँ से निकलते वक़्त साधू ने सूरजभानु से कहा–"वैसे उम्र में तुम छोटे हो, फिर भी साधू-संतों के प्रति तुम बड़ी श्रद्धा और

रमेश नारंग

भक्ति रखते हो, तुम्हारे व्यवहार पर मैं प्रसन्न हो गया हूँ। अगर तुम मुझ से कोई मदद चाहते हो, तो माँग लो।"

सूरजभानु ऐसे ही वक्त के इंतजार में था। उसने पहले से ही चन्द्रभानु को खतम करने के लिए अपने मन में एक योजना बना ली थी, साधू से बोला—"साधू महराज, जंगल के पास के मेरे खेत की फ़सलों को बचाना बड़ा मुश्किल सा हो गया है। जंगली भैंसें और अन्य जानवर भी मेरी फ़सलों को बरबाद कर रहे हैं। इसलिए उन्हें डराने के लिए मुझे ऐसा वर दीजिए जिससे मैं जब जिस खूंख्वार जानवर का रूप चाहूं, धारण कर सकूं।"

साधू सूरजभानु के चेहरे को परख कर देखते हुए मुस्कुरा उठा, अपनी थैली में से तीन जड़ी-बूटियाँ निकाल कर उसके हाथ में देते हुए बोला—"ये जड़ी-बूटियाँ तुम्हें सिर्फ़ तीन बार काम देंगी, इन में से एक जड़ी-बूटी को मुंह में डाल कर चबाते हुए तुम जिस जानवर का रूप धारण करना चाहते हो, वह रूप अपने संकल्प मात्र से ही धारण कर सकते हो। अगर उस जानवर के रूप को कोई खतरा पहुँचे या तुम अपने निजी रूप को पाना चाहो, तो वह रूप तुम्हें मिल जाएगा।"

उस दिन से सूरजभानु चन्द्रभानु को खात्मा करने के लिए मौक़े का इंतज़ार करने लगा। एक दिन दुपहर को चन्द्रभानु को जंगल में जाते हुए सूरजभानु ने देख लिया। वह भी चुपचाप चन्द्रभानु के पीछे चल पड़ा और घने पेड़ों की ओट में जाकर उसने एक बूटी अपने मुंह में डाल ली, उसे चबा कर वह भालू के रूप में बदल गया। सूरजभानु का विचार था कि चन्द्रभानु के लौटते वक़्त अचानक उस पर हमला करके उसे मार डाला जाय।

सूर्यास्त के थोड़ी देर पहले ही चन्द्रभानु को पेड़ों के बीच से लौटते हुए भालू रूपधारी सूरजभानु ने देख लिया, तुरंत वह झाड़ियों की ओट में छिपते हुए चन्द्रभानु के समीप

पहुँचने ही वाला था, तभी कोई आदमी पेड़ों की आड़ में से अचानक बाहर आया, अपने जालको घुमाते हुएबोला–" चन्द्रभानु, तुम हट जाओ ; मेरा यहाँ पर आना बेकार न हुआ, भालू तो आज हाथ लग गया है ।"

वह एक नामी शिकारी था । जंगल से खूंख्वार जानवरों को पकड़ ले जाकर चिड़ियाघरों में बेचा करता था । चन्द्रभानु और सूरजभानु भी उसको अच्छी तरह से जानते थे ।

शिकारी को देखते ही सूरजभानु जान हथेली में लेकर पेड़ों के झुरमुठ में भाग गया और उसने अपना निजी रूप प्राप्त होने की कामना की । इतने में शिकारी और चन्द्रभानु वहाँ पर आ पहुँचे और उससे पूछा–" इधर कहीं तुमने भालू को देखा है ? " सूरजभानु भोले बन कर बोला–" मैंने तो भालू को इधर कहीं नहीं देखा है ।" इसके बाद वह निराश हो चुपचाप अपने घर चला गया ।

इस प्रकार साधू से सूरजभानु को प्राप्त एक जड़ीबूटी बेकार गई । दूसरे दिन सूरजभानु ने सोच-विचार कर जड़ी-बूटी चबाकर भैंसे का रूप धारण किया, और इस रूप में वह चन्द्रभानु को अपने सींग मार कर, पैरों से कुचल कर मार डालना चाहता था । भैंसे के रूप में सूरजभानु चन्द्रभानु की खोज कर रहा था, तब एक बाघ उसे देख भयंकर रूप में गरज उठा । इस पर डरकर सूरजभानु भाग खड़ा हुआ । बाघ उसका पीछा करने लगा । ऐसी हालत में लाचार होकर उसने फिर से मानव का रूप धारण कर लिया, एक पेड़ पर उछल कर उसने अपनी जान बचाई ।

दूसरी बार भी अपनी जड़ी बूटी के बेकार जाते देख सूरजभानु बड़ा ही निराश हो गया और तीसरी बार उसने जंगल में जाकर बाघ का रूप धारण किया और पेड़ों की ओट में ताक लगाये बैठा रहा । चन्द्रभानु थोड़ी देर बाद कुल्हाड़ी कंधे पर

डाल कर लकड़ी काटने के लिए उसी ओर आ निकला।

सूरजभानु पेड़ों की ओट में से भयंकर गर्जन करते हुए बाहर कूद पड़ा। बाघ का गर्जन सुनकर चन्द्रभानु घबरा गया और पीछे मुड़कर देखा, जिस से कंधे पर से उसकी कुल्हाडी फिसल कर नीचे गिर पड़ी। इस पर वह जान के डर से एक दलदल वाले तालाब के किनारे से भागने लगा। उसको अपने मुंह में दबाने की जल्दबाजी में सूरजभानु उछल कर कूदते हुए पैर फिसलने के कारण दलदल में गिर गया।

दल दल से बाहर निकलने की कोशिश में सूरज भानु इधर-उधर हाथ-पैर मारने लगा, जिससे वह दल दल में और फँसता गया। इस पर मौत के डर से चीखते-चिल्लाते सूरजभानु ने फिर से मानव का रूप पा लिया, कंधे तक की गहराई वाली दल दल से हाथ हिलाते चिल्लाने लगा—

"चन्द्रभानु, मर रहा हूँ; मुझे बचा लो।" यह पुकार सुनकर चन्द्रभानु अचरज में आ गया, वहाँ पर पहुँच कर अपनी शाल को फेंक कर सूरजभानु को बाहर खींचते हुए पूछा—"सूरजभानु, तुम्हें बाघ का रूप कैसे प्राप्त हुआ? तुम मेरे पीछे क्यों पड़ गये हो?"

सूरजभानु चन्द्रभानु के पैरों पर गिर पड़ा उससे माफ़ी मांग ली, तब उसे सारी कहानी सच-सच सुनाई।

चन्द्रभानु सूरजभानु को सांत्वना देते हुए बोला—" सूरज, तुम्हारे अनुभव के द्वारा तुम्हें यह साबित हो गया है न कि ईर्ष्या मनुष्य को खूंख्वार जानवर के रूप में भी बदल सकती है। जो कुछ हुआ, उसे हम दोनों भूल जायेंगे। तुम उस पहाड़ी झरने में पहले नहा तो लो, बाद को हम घर चले जा सकते हैं।" यों समझा कर उसका हाथ पकड़ कर चन्द्रभानु उसे झरने की ओर ले गया।

विचित्र जन्मकुंडली

कलिंग राज्य में कई महा नगर थे। उन में दांतिपुर एक था। दांतिपुर नगर के राजा कलिंगु थे। उनके बड़ा कलिंगु और छोटा कलिंगु नामक दो पुत्र थे। उन की जन्म कुंडलियों की जाँच करके ज्योतिषियों ने यों बताया–" पिता के अनंतर ज्येष्ट पुत्र ही राजा बनेगा, पर छोटे की जन्म कुंडली विचित्र और अपूर्व है। वह जिंदगी भर सन्यासी जैसा समय काटेगा, मगर वह महाराज योगवाले एक पुत्र का जन्म देगा।"

कुछ साल बाद राजा कलिंगु का स्वर्गवास हो गया। इस पर ज्येष्ट पुत्र का राज्याभिषेक हुआ। छोटे को राज प्रतिनिधि का पद मिला। लेकिन उसके मन में ज्योतिषियों की यह बात अच्छी तरह से घर कर गई कि उसके होनेवाला पुत्र महाराजा बनेगा। इसके बल पर वह अपने बड़े भाई के आदेशों का पालन किये बिना स्वेच्छा पूर्वक व्यवहार करने लगा। इस कारण दोनों भाइयों के बीच मनमुटाव पैदा हुआ। बड़े भाई ने छोटे को बन्दी बनाने का आदेश दिया।

उन्हीं दिनों में बोधिसत्व कलिंग राज्य के मंत्रियों में से एक थे। बड़े कलिंगु के शासन काल तक वे काफी बूढ़े हो चले थे। राज परिवार का हित चाहने वाले उस वृद्ध मंत्री ने गुप्त रूप से छोटे कलिंगु को राजा का आदेश सुनाया। छोटे को यह बात अपमान जनक मालूम हुई। उसने कहा–" महानुभाव, आप सब प्रकार से मेरे हितैषी हैं। आपने ज्योतिषियों की बातें सुनी हैं। अगर वे बातें सच साबित हो सकती हैं तो मेरी कामना की पूर्ति करने की जिम्मेदारी आप पर हैं। लीजिये–मेरी नामांकित अंगूठी, मेरी शाल और मेरी

तलवार। ये तीनों जो व्यक्ति लाकर मेरी निशानी के रूप में आप को दिखायेगा, समझ लीजिये, वही मेरा पुत्र है। आप जो भी उसकी मदद कर सकते हैं, जरूर कीजियेगा।" यों निवेदन कर किसी को बताये बिना वह जंगलों में भाग गया।

उन्हीं दिनों में कई साल बाद मगध राजा के एक पुत्री हुई। उसकी जन्म कुंडली देख ज्योतिषियों ने बताया– "इसकी जन्म कुंडली विचित्र है। यह सन्यासिनी जैसी जिंदगी बितायेगी, मगर इसके महाराजा योग वाला पुत्र पैदा होगा।"

यह खबर मिलते ही सभी सामंत राजा राज कुमारी के साथ विवाह करने के लिए होड़ लगाने लगे। अब राजा के सामने बड़ी जटिल समस्या पैदा हो गई। उनमें से किसी एक के साथ राज कुमारी का विवाह करें तो बाक़ी लोग उनके साथ बदला लेने की सोचेंगे। इसलिए राजा ने उस खतरे से बचने का निश्चय किया। लाचार होकर एक दिन राजा अपनी पत्नी और पुत्री को लेकर गुप्त रूप से जंगलों में भाग गये।

एक नदी के किनारे कुटी बना कर उस में तीनों सादा जीवन बिताने लगे। उस कुटी से थोड़ी दूर पर कलिंग राज कुमार की कुटी थी।

एक दिन अपनी पुत्री को कुटी में छोड़ मगध राज दंपति कंद-मूल और फल लाने चले गये। उस समय राज कुमारी ने तरह-तरह के फूल तोड़ कर एक सुंदर माला बनाई।

कुटी के पास ही बहने वाली गंगा नदी के किनारे एक आम का बहुत बड़ा पेड़ था। मगध राज कुमारी उस पेड़ पर चढ़कर डालों में बैठ गई। वहाँ से फूलों की माला पानी में फेंक दी और तमाशा देखने लगी।

वह फूल माला तिरते गई और स्नान करने वाले छोटे कलिंगु के सर से जा लगी। माला हाथ में लेकर छोटे कलिंगु अपने मन

में सोचने लगा–"ओह, यह कैसी सुंदर फूल माला है। इसमें कितने प्रकार के फूल हैं। इसे कैसी सुंदर बनाई है किसी युवती ने। वह जरूर कोई अपूर्व सुंदरी होगी। इस भयंकर जंगल में वह सुंदरी क्यों आई होगी?" यों अनेक प्रकार से सोच-विचार कर आखिर वह छोटा कलिंगु उस सुंदरी की खोज करने के लिए उसी वक्त चल पड़ा।

वह जंगल में चला जा रहा था। उसे एक दिशा में मधुर कंठ स्वर सुनाई दिया। उसने रुक कर इधर-उधर अपनी नजर दौड़ाई। आम की डालों पर बैठे गीत गाने वाली वह सुंदरी राजकुमार छोटे कलिंगु को दिखाई दी।

राजपुत्री को देख कलिंगु मुग्ध हो एकटक उसकी ओर ताकता रहा, फिर अपने को संभाल कर कुशल प्रश्नों के साथ उससे वार्तालाप करना शुरू किया। अंत में कलिंगु ने उसे अपनी पत्नी बनाने की इच्छा प्रकट की। इस पर युवती ने कहा–"आप तो किसी मुनि परिवार के लगते हैं, पर हम लोग क्षत्रिय हैं। ऐसी हालत में हमारा विवाह कैसे संभव हो सकता है?"

इसके जवाब में कलिंगु ने बताया–"हम भी क्षत्रिय हैं।" इन शब्दों के साथ उसने अपनी सारी कहानी आदि से लेकर अंत तक सुनाई। इस पर राज कुमारी ने अपने परिवार का सारा रहस्य खोल दिया। इसके बाद वे दोनों राजकुमारी के पिता

के पास पहुँचे। राजा ने सारा वृत्तांत जान कर अपने मन में निश्चय कर लिया कि राजकुमारी के योग्य वर यही है।" इसके बाद छोटे कलिंगु तथा मगध राजकुमारी का विवाह हुआ।

एक साल बाद उनके एक पुत्र पैदा हुआ। राज लक्षणों से सुशोभित उस शिशु का नामकरण विजय कलिंगु किया गया। बड़े ही लाड़-प्यार से उसका पालन-पोषण होने लगा।

थोड़े समय बाद एक दिन कलिंगु ने जन्म कुंडलियाँ निकाल कर हिसाब किया और यह जाँचकर देखा कि उन दोनों के ग्रह कूट कैसे हैं! उस हिसाब से पता चला कि बड़े कलिंगु की आयु अब तक समाप्त हो गई होगी।

इस पर छोटे कलिंगु ने अपने पुत्र विजय कलिंगु को बुला कर समझाया–"बेटा, तुम्हें तो अपना जीवन इन जंगलों में बिताना नहीं है। मेरे बड़े भाई बड़े कलिंगु दांतिपुर के राजा हैं। तुम उस राज्य के वारिस हो। इसलिए तुम शीघ्र जाकर उनके उत्तराधिकारी के रूप में सिंहासन पर विराजमान हो जाओ।" यों समझाकर उसने वृद्ध मंत्री का वृत्तांत सुनाया और निशाने के रूप में वे तीन चीजें सौंपकर आशीर्वाद, देकर भेज दिया।

अपने माता-पिता तथा नाना-नानी से अनुमति लेकर विजय कलिंगु दांतिपुर पहुँचा। वृद्ध मंत्री के दर्शन करके अपना परिचय दिया।

तब तक छोटे कलिंगु के अंदाज के अनुसार बड़े कलिंगु का देहांत हो चुका था। दांतिपुर में अराजकता फैल गई थी।

वृद्ध मंत्री ने एक महा सभा की और छोटे विजय कुलिंगु का जन्म वृत्तांत सब को सुनाया। सभा सदों ने आश्चर्य में आकर जयकार किये।

इसके बाद राज सिंहासन पर बैठ कर विजय कलिंगु ने वृद्ध मंत्री की सलाहों के अनुसार राज्य किया और अपने पूर्वजों की प्रतिष्ठा क़ायम रखी।
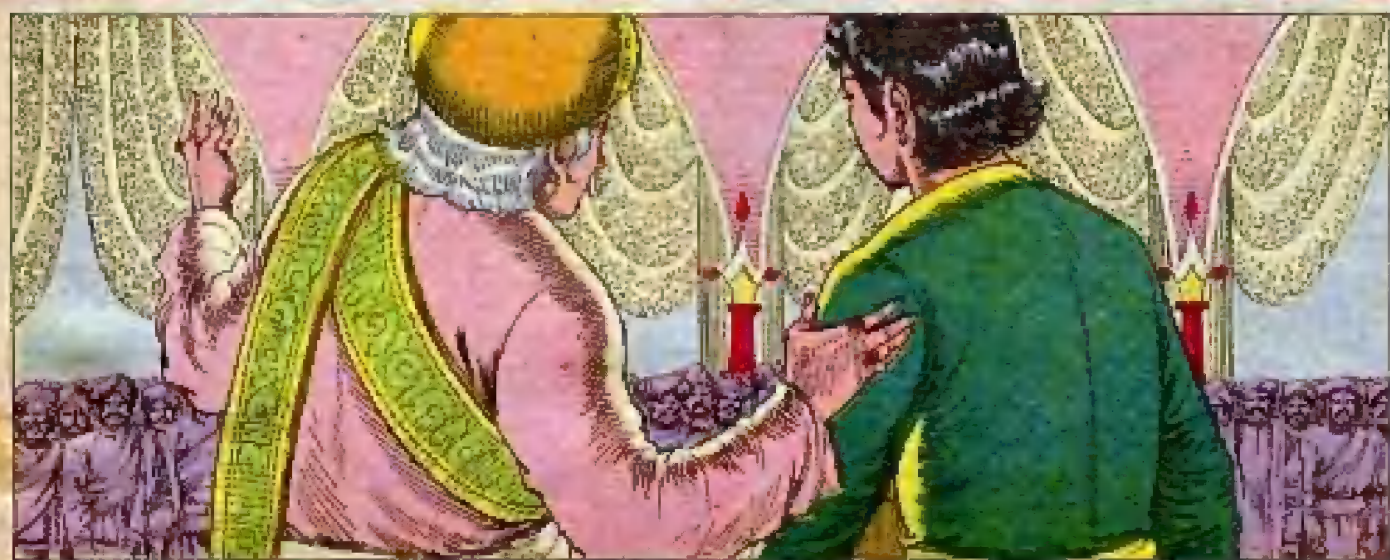
तैमूर का हमला

समरकंद के अमीर तैमूरलेन ने भारतदेश की समृद्धि के बारे में कई कहानियाँ सुन रखी थीं। भारत से व्यापारियों के द्वारा लाई गई अनेक अद्‌भुत चीजें देख वह अचरज में आ गया। तब से वह भारत पर हमला करने के सपने देखने लगा।

बड़ी भारी फौज इकट्ठी करके तैमूर ने ई. सन. १३९८ को दिल्ली पर हमला कर दिया। रास्ते में पड़ने वाले हर गाँव और शहर को लूट लिया और हजारों की संख्या में बन्दी बनाकर अपनी फ़ौज के साथ उन्हें पैदल चलने पर विवश किया।
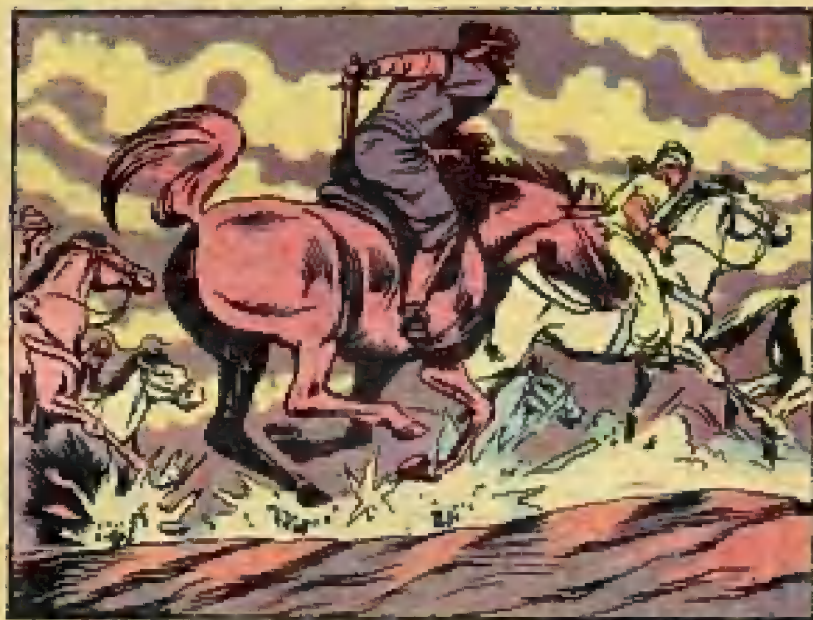
उस समय दिल्ली पर तुगलक वंश का आखिरी व्यक्ति महमूद शासन कर रहा था। महमूद ने तैमूर की सेनाओं का सामना किया, लेकिन उसकी फ़ौज बड़ी कमजोर थी। इसलिए तैमूर की सेना के सामने ठहर न पाई। इस कारण बड़ी आसानी से तैमूर ने दिल्ली पर क़ब्जा कर लिया।

इस पर सुलतान महमूद गुजरात भाग गया । तैमूर अपने साथ एक लाख क़ैदियों को लाया था, लेकिन बाद को उसने यह सोचकर उन सब को क़त्ल करवाया कि कहीं वे लोग विद्रोह न कर बैठें । दिल्ली नगर के आसपास खून का प्रवाह देख वहाँ की जनता भय कंपित हो उठी ।

एक दिन तैमूर आराम कर रहा था । मौक़ा देख दिल्ली के कुछ प्रमुख नागरिक उसके साथ मैत्री करने के ख़याल से कई क़ीमती भेंट व उपहार लेकर उससे मिलने आये ।

लेकिन इसके बाद वहाँ की हालत एक दम बदल गई । तैमूर के दो सैनिक शराब पीकर एक जगह दुर्व्यवहार करने लगे, इस पर एक व्यापारी ने उन दोनों सैनिकों में से एक के गाल पर खींच कर थप्पड़ मारा । यह ख़बर तैमूर के कानों में पहुँची ।

इस घटना को बहाना बनाकर तैमूर ने अपने सैनिकों को दिल्ली की भोली जनता पर उकसाया। इस पर उन सैनिकों ने घर, दूकान और मंदिर का भेदभाव रखे बिना सब को लूट लिया।

सैनिकों ने एक-एक प्रदेश को लूटने के बाद उस में आग लगा दी। इस कारण कई लोग आग की आहुति हो गये। बाक़ी लोग बेघरबार हो गये। दिल्ली नगर को ऐसे अमानुष कृत्यों को देखना पड़ा, जिन्हें तब तक वहाँ की जनता ने कभी न सुना व देखा था।
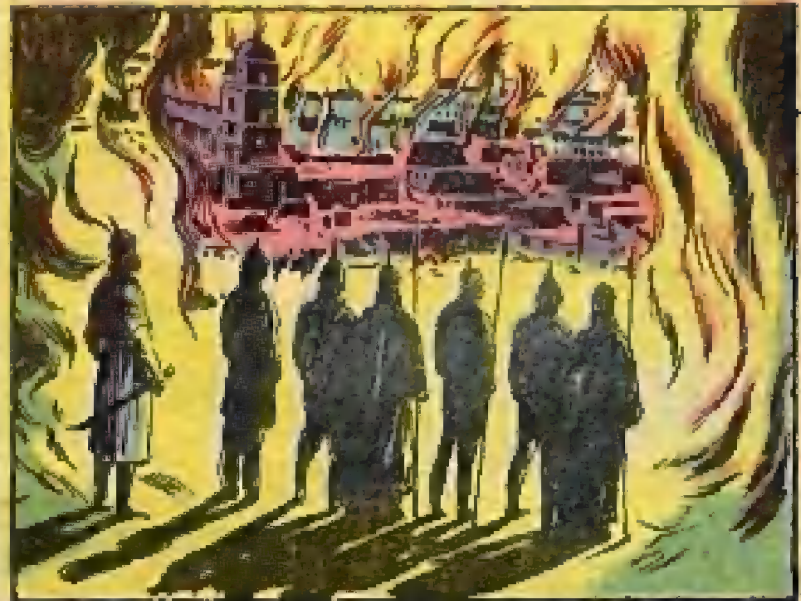
हज़ारों की संख्या में लोग मारे गये, बचे हुए लोग सैनिकों द्वारा जेलों में ठूँस दिये गये। वहाँ के लोगों ने अगर उन सैनिकों का सामना करने की थोड़ी भी कोशिश की या भागने का प्रयत्न किया तो उन्हें मौत के मुँह में जाना पड़ता था। पंद्रह दिन तक लगातार दिल्ली नगर को भयंकर यातनाएँ झेलनी पड़ीं।

दिल्ली के सैकड़ों कलाकार और शिल्पी तैमूर के बन्दी बने। वह अपार संपत्ति के साथ सैकड़ों शिल्पियों को साथ लेकर अपने देश को लौटने लगा। लौटती यात्रा में वह रास्ते भर मेरठ, कांग्रा, जम्मू आदि को लूटते व सर्वनाश करते आगे बढ़ा।
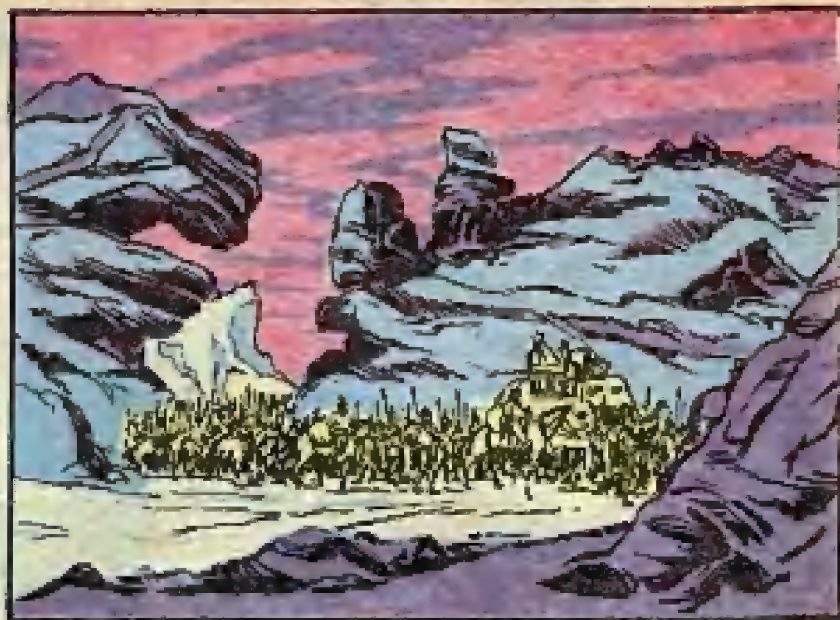
तैमूर के चले जाने के बाद दिल्ली नगर भयंकर अकाल और बीमारियों का शिकार बना। इस कारण जो लोग बच गये थे, वे भी थोड़े दिन बाद मर गये। सुंदर दिल्ली नगर भूतों के नगर के रूप में दिखाई देने लगा।

अपने साथ ले गये शिल्पियों के द्वारा तैमूर ने समरकंद में एक विशाल अद्भुत मसजिद बनवाई। उस मसजिद ने वहाँ की शिल्पकला को अत्यंत प्रभावित किया। भारत पर हमला करने के दस वर्ष बाद ई.सन् १४०३ में तैमूर का निधन हो गया।

सच्ची प्रतिष्ठा

चण्ड प्रचण्ड नामक एक नामी संगीत विद्वान एक बार धर्मपुरी में आया। इसके पहले वह कई देशों में जाकर वहाँ के राजाओं के द्वारा अनेक बार सम्मान प्राप्त कर चुका था।

धर्मपुरी के जमीन्दार बड़े ही सज्जन पुरुष थे। चण्ड प्रचण्ड जब उनके गाँव में आया तब उन्होंने संगीत विद्वान के रूप में उसका सम्मान किया, साथ ही उस विद्वान के द्वारा घर ठीक करने तक अपने ही घर पर उसके आतिथ्य का इंतजाम किया।

जमीन्दार के चार बच्चे थे। वे चारों संगीत के प्रति अभिरुचि रखते थे। साथ ही उनके रिश्तेदारों के बच्चे छे और थे। वे भी संगीत के प्रेमी थे। इस वजह से जमीन्दार ने पड़ोसी गाँव से एक संगीत विद्वान को बुलवा भेजा। उनके यहाँ बच्चे संगीत सीखने लगे।

चण्ड प्रचण्ड ने एक बार उन गुरु-शिष्यों की संगीत साधना को सुना, उन्होंने जमीन्दार से शिकायत की–"महाशय, इस विशाल विश्व में आप को इससे बढ़ कर योग्य विद्वान कहीं नहीं मिले ? ये तो बच्चों को गलत रास्ते पर ले जा रहे हैं।"

चण्ड प्रचण्ड की बातें सुनकर जमीन्दार हँस पड़े और चुप रह गये, पर उन्होंने गुरु को नहीं बदला। कुछ दिन बाद चण्ड प्रचण्ड ने एक मकान खरीद लिया और उस में जा बसे। थोड़े दिन बाद पड़ोसी गाँव के संगीत विद्वान ने बच्चों को संगीत सिखाने के लिए आना बंद किया।

दर असल धर्मपुरी में संगीत सीखने वाले बच्चे थे, पर संगीत सुनने की इच्छा बड़े लोगों में बिलकुल न थी। अकेले संगीत की साधना करते चण्ड प्रचण्ड भी ऊब गये थे। इसलिए उन्होंने अपने मन में

गोमती वर्मा

सोचा था कि जमीन्दार के अनुरोध करने पर बच्चों को संगीत सिखाते हुए अपने समय का सदुपयोग कर ले। मगर जमीन्दार ने कभी चण्ड प्रचण्ड के सामने यह प्रस्ताव न रखा। एक दिन चण्ड प्रचण्ड ने जमीन्दार के सामने खुद यह प्रस्ताव रखा। बस, दूसरे दिन उनके यहाँ संगीत सीखने के लिए सौ बच्चे आ धमके। चार-पाँच दिन तक बड़ी मेहनत उठाकर चण्ड प्रचण्ड ने उन बच्चों को संगीत का अभ्यास कराया, लेकिन जमीन्दार के बच्चों को छोड़ बाक़ी बच्चे आज का पाठ कल तक भूल जाते थे। साथ ही आज जो लड़के आते, वे दूसरे दिन आते न थे। इस झंझट से छुटकारा पाने का उपाय न जान कर चण्ड प्रचण्ड ने अपनी यह समस्या जमीन्दार के सामने रखी।

जमीन्दार ने सलाह दी–"पंडितजी, आप मुफ़्त में संगीत सिखाना चाहेंगे, तो ऐरे-गैरे सभी लड़के आ जायेंगे, इसलिए आप संगीत सिखाने के लिए थोड़ा-बहुत शुल्क वसूल कीजियेगा।"

इस पर चण्ड प्रचण्ड ने संगीत सिखाने के लिए फी बच्चे एक सिक्का शुल्क रखा। इस निर्णय के बाद उनके शिष्यों की संख्या सौ से बीस तक पहुँची। उनमें भी दस बच्चे जमीन्दार के परिवार के थे। बाक़ी दूसरे परिवारों के बच्चे थे।

चण्ड प्रचण्ड बड़ी लगन के साथ अपने शिष्यों को संगीत का अभ्यास कराने लगे। उनका विचार था कि उन बच्चों को अपने ही समान संगीत में प्रवीण बनावे। लेकिन धीरे-धीरे जमीन्दार का व्यवहार उनके दिल को ठेस पहुँचाने लगा।

साधारण शिष्यों के माता-पिता अकसर उनके पास आ जाते और उनकी संगीत-साधना की बड़ी तारीफ़ किया करते थे। हर महीने का शुल्क वक़्त पर चुका देते थे। लेकिन जमीन्दार ने कभी उनकी विद्या की तारीफ़ नहीं की और न शुल्क समय पर चुकाया।

एक साल जैसे-तैसे बीत गया। चण्ड-प्रचण्ड के मन में यह शंका पैदा होने लगी कि वह तनख्वाह लेकर बच्चों को संगीत सिखाते हैं, इस कारण जमीन्दार उनका आदर नहीं कर रहे हैं।

एक दिन उन्होंने जमीन्दार के घर जाकर कहा–"महानुभाव, इधर मेरी तबीयत कुछ ठीक नहीं है। आप कृपया अपने बच्चों को संगीत सिखाने के लिए किसी दूसरे गुरु को नियुक्त कीजिए।"

"आप के स्वास्थ्य से बढ़ कर बड़ी चीज़ और क्या हो सकती है? आप कृपया आराम कीजिए।" जमीन्दार ने झट जवाब दिया।

ये बातें सुनने पर चण्ड प्रचण्ड को जमीन्दार पर बड़ा गुस्सा आ गया। उन्होंने सोचा था कि जमीन्दार गिड़गिड़ा कर अपने बच्चों को संगीत सिखाने के लिए उनसे अनुरोध करेंगे। मगर ऐसा न हुआ।

एक सप्ताह के अन्दर गाँव में एक नया संगीत विद्वान आ पहुँचा। जमीन्दार हर महीने समय पर उसे वेतन चुकाने लगे। प्रति दिन उस विद्वान का परामर्श करके अच्छे ढंग से संगीत सिखाने की उसकी प्रशंसा किया करते थे। उसे प्रोत्साहन भी देते थे।

नये संगीत विद्वान का नाम संगीत शर्मा था संगीत शर्मा जो कुछ विद्या जानता था, वह बच्चों को सिखलाता और बड़े विद्वानों से अगर मुलाक़ात हो जाती तो उनसे संगीत सीखने को वह लालायित भी रहने लगा। उसे जब चण्ड प्रचण्ड की बात मालूम हुई, तब वह उनके दर्शन करने उनके निवास पर खुद पहुँचा।

चण्ड प्रचण्ड ने संगीत शर्मा का आदर के साथ स्वागत किया, उसके द्वारा यह जानकर वे आश्चर्य में आ गये कि जमीन्दार उसका कैसे आदर करते हैं। इसके बाद चण्ड प्रचण्ड ने संगीत शर्मा से कहा–मैं जो कुछ जानता हूँ वह सारी विद्या मैं तुमको सिखाऊँगा। पर जमीन्दार तुम्हारा जैसा आदर करते हैं, वैसा उन्होंने मेरे साथ

नहीं किया है। तुम एक काम करो, कभी फ़ुरसत के वक़्त तुम उनके मुँह से यह जान लो कि उन्होंने मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया है? क्योंकि अगर मेरे भीतर कोई त्रुटि हो तो मैं उसे सुधारना चाहता हूँ।" यह खबर सुनकर संगीत शर्मा अचरज में आ गया। उसने एक दिन जमीन्दार से पूछा–"महानुभाव, आप मेरे साथ बहुत ही अच्छा व्यवहार कर रहे है, लेकिन मैंने कुछ लोगों के मुंह से सुना है कि इसके पूर्व आप के बच्चों को संगीत सिखाने वाले चण्ड प्रचण्ड को आप ने कभी समय पर वेतन नहीं दिया है और न कभी आप ने उनकी प्रशंसा ही की है। मैं आप के मुंह से यह जानना चाहता हूँ कि मैं उनसे ज्यादा आदर पाने लायक़ कैसे बन गया हूँ?"

इस पर जमीन्दार ने हँस कर जवाब दिया–" मैं सच्ची बात बता दूं तो तुम दुखी नहीं होगे न?"

"इसमें दुखी होने की क्या बात है? बताइये।" संगीत शर्मा ने कहा।

"तुम तो धन के वास्ते संगीत सिखाते हो, लेकिन उन्होंने शौक़ से सिखाया है। उन्हें मासिक वेतन देना चाहे तो उनकी विद्या का मूल्य आंकने में मुझे दुख होता था। उनके सामने उनकी प्रशंसा करने में भी मुझे संकोच होता था। राजा-महाराजाओं के द्वारा सम्मान पाने वाले उन महान विद्वान की मैं क्या प्रशंसा करूँ? तुम थोड़ी-बहुत विद्या सीख कर अपना पेट भरने के लिए संगीत सिखाते हो, ऐसी हालत में उस महा पंडित की तुलना तुम्हारे साथ कैसे की जा सकती है?" जमीन्दार ने कहा।

यह समाचार जब संगीत शर्मा के द्वारा चण्ड प्रचण्ड ने सुना, तब वे यह सोच कर दुखी हो गये कि उन्होंने जमीन्दार को नाहक़ गलत समझ लिया है। इसके बाद एक दिन जमीन्दार ने एक बड़े समारोह का आयोजन किया और चण्ड प्रचण्ड को स्वर्ण कंगन पहना कर भारी पैमाने पर उनका सम्मान किया।

झूठा फ़ैसला

नागपुर के राजा शक्तिसिंह के दरबार में उनके दो प्रेम पात्र व्यक्ति थे। उनमें से एक सूर्यवर्मा नामक एक सामंत था। वह राजा के एक निकट रिश्तेदार भी था। उसके सीमंतिनी नामक एक विवाह योग्य कन्या थी।

राजा के लिए अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय पात्र दूसरा व्यक्ति चन्द्रपाल नामक एक युवक था। वह राजा का प्रधान अंगरक्षक भी था। राजा अगर कभी लड़ाई में जाते तो उनके साथ रहकर चन्द्रपाल अपनी असाधारण वीरता का परिचय देता था।

चन्द्रपाल ने युद्ध-भूमि में कई बार राजा के प्राणों की रक्षा की थी। इसलिए राजा उसको अपने बेटे से भी कहीं ज्यादा मानते थे। सभी राजभट उसको बहुत मानते थे। सामंत सूर्यवर्मा की पुत्री सीमंतिनी ने बहुत समय पहले ही चन्द्रपाल को अपने पति के रूप में चुन लिया था। एक बार उचित मौक़ा पाकर उसे बुलवा भेजा। दोनों ने आपस में बात की। चूंकि पहले ही वे दोनों आपस में प्यार करते थे, इसलिए दोनों ने विवाह करने का निश्चय कर लिया।

चन्द्रपाल ने यह बात राजा से कह दी। इस पर राजा ने सूर्यवर्मा को बुलवा कर पूछा—"सूर्यवर्मा, मैंने सुना है कि तुम्हारी पुत्री सीमंतिनी चन्द्रपाल से प्यार करती है; क्या उन दोनों का विवाह करें?"

यह समाचार सुनते ही सूर्यवर्मा का चेहरा तमतमा उठा। उसने कहा—"यह कभी संभव नहीं है! मैं इसे पसंद भी नहीं करता, साथ ही मैं इस बात पर यकीन भी नहीं कर सकता कि मेरी बेटी चन्द्रपाल के साथ प्यार करती है!"

२५ वर्ष पहले की चन्दामामा की कहानी

इसके बाद घर लौट कर सूर्यवर्मा ने अपनी बेटी से बात की। सीमंतिनी ने मान लिया कि वह चन्द्रपाल के साथ प्यार करती है। इस पर नाराज हो कर सूर्यवर्मा ने अपनी बेटी को खूब डांटा भी।

इस घटना के बाद दूसरे दिन सीमंतिनी सब की आँख बचा कर घर से निकल पड़ी और चन्द्रपाल के पास पहुँची। एक पुरोहित ने उन दोनों का विवाह किया। इसके बाद दोनों एक जंगल में पहुँच कर अपनी गृहस्थी चलाने लगे।

वह जंगल चन्द्रपाल का ही था। कुछ दिन पहले राजा ने चन्द्रपाल को नगर के बाहर थोड़ी सी जमीन इनाम में दे रखी थी। उस में जंगल का एक हिस्सा ऐसा था, जहाँ पर केवल अशोक वृक्ष ही थे। वहीं पर चन्द्रपाल ने एक कुटी बना ली।

एक दिन सूर्यवर्मा ने एकांत में राजा के दर्शन करके बताया—"महाराज, मैं लोगों को अपना चेहरा दिखाने लायक़ न रहा। आप यदि चन्द्रपाल को यह आदेश दे कि वह मेरी पुत्री को मुझे लौटा दे तो वह जरूर आप के आदेश का पालन करेगा।"

राजा ने सूर्यवर्मा से कहा—"मैं खबर भेज दूंगा।" लेकिन उन्होंने चन्द्रपाल के पास कभी खबर न भेजी।

इस पर सूर्यवर्मा ने राजा के द्वारा कोई न कोई कार्य कराने के ख्याल से एक उपाय किया। भरे दरबार में खड़े होकर सूर्यवर्मा ने निवेदन किया—"महाराज, मुझे मालूम हुआ है कि चन्द्रपाल मेरी पुत्री को जबर्दस्ती ले जाकर जंगल में निवास करता है। आप कृपया मेरी पुत्री को मुझे दिलवा दीजिए और उस दुष्ट को दण्ड देकर मेरे प्रति न्याय कीजिए।"

अब राजा को विवश होकर कुछ कार्रवाई करनी पड़ी। उन्होंने अपने सेवकों को आदेश दिया—"तुम लोग जंगल में जाकर चन्द्रपाल को बन्दी बना कर ले आओ और सीमंतिनी को लाकर सुरक्षित रूप से सूर्यवर्मा के घर पहुँचा दो।"

राजभट अशोक वन की ओर चल पड़े, सूर्यवर्मा भी हाथ में तलवार लेकर एक वीर की भांति उन के पीछे हो लिया।

दर असल राजभट चन्द्रपाल को अपनी जान से ज़्यादा मानते थे। उसके साथ लड़ने की इच्छा किसी के मन में न थी। इसलिए उन लोगों ने अपने दल के दो भटों को पहले ही चन्द्रपाल के पास भेजकर असली बात की खबर कर दी।

चन्द्रपाल को जब पता चला कि उसे बन्दी बनाने के लिए सूर्यवर्मा राजभटों को साथ ले आ रहा है, तब चन्द्रपाल ने सीमंतिनी को जंगल में दूर पर एक गुप्त प्रदेश में छिपा रखा और वह अकेले अपनी कुटी को लौट आया। इसके थोड़ी देर बाद सूर्यवर्मा राजभटों के साथ वहाँ पहुँचा, उन्हें कुटी के चारों तरफ़ खड़ा करके दर्वाज़ा खटखटाया।

इस पर चन्द्रपाल बाहर आया, सूर्यवर्मा को नखशिख पर्यंत देखकर बोला—"आपकी वीरता कहाँ गई? इतने सारे लोगों को साथ ले आये हैं? आज हम दोनों फ़ैसला कर लेंगे।" यों कहते चन्द्रपाल ने अपनी तलवार खींच ली।

"तुम्हारे साथ युद्ध करने की मुझे ज़रूरत ही क्या है।" इन शब्दों के साथ सूर्यवर्मा ने राजभटों की ओर मुड़कर आज्ञा दी—"अरे, इस नीच को बन्दी बनाओ।" लेकिन उन भटों में से एक भी हिला-डुला नहीं। इस पर चन्द्रपाल ने

सूर्यवर्मा को द्वन्द्व युद्ध के लिए पुकारा, तो उसने इनकार कर दिया । सूर्यवर्मा को देख सभी भट घृणा करने लगे ।

"अच्छी बात है, तब तो तुम लोग मुझे पकड़ सकते हो ।" यों कहते चन्द्रपाल राजभटों के बीच मे होकर जंगल में भाग गया । मगर राजभटों ने चन्द्रपाल को बन्दी बनाने की कोशिश नहीं की । कुटी में सीमंतिनी का पता न चला । इस वजह से सूर्यवर्मा की सारी कोशिश बेकार गई ।

सूर्यवर्मा ने सोचा कि अब राजा पर निर्भर रहने से काम न बनेगा । इस बार उसने एक और उपाय किया । उसने कुछ कवियों और गायकों को बुलवा कर, उन्हें काफ़ी धन दिया और समझाया– "तुम लोग अशोक वन में जाकर चन्द्रपाल की प्रशंसा में गीत गाओ, इस बीच मेरे नौकर उसको बन्दी बनाकर मेरे पास ले आयेंगे । इसके बाद तुम लोग अपने रास्ते आप जा सकते हो ।"

उसका उपाय चल पड़ा । कवि और गायक चन्द्रपाल की कुटी में जाकर जब स्तोत्र पाठ करने लगे तब सूर्यवर्मा के नौकरों ने अचानक चन्द्रपाल पर हमला करके उसे बन्दी बनाया और सूर्यवर्मा के सामने हाज़िर किया । इसके बाद सूर्यवर्मा ने चन्द्रपाल को दरबार में ले जाकर राजा से निवेदन किया–"महाराज, मैं अपराधी को बन्दी बनाकर लाया हूँ । आप कृपा करके फ़ैसला कीजिए ।"

राजा ने चन्द्रपाल से पूछा–"सुना है कि तुम सीमंतिनी को ज़बर्दस्ती अपने साथ ले गये हो ; क्या यह सच है ?"

"महाराज, अगर यही मेरा अपराध है, तो मैं निर्दोष हूँ । सीमंतिनी ने अपनी इच्छा से स्वयं मेरे पास आकर मेरे साथ विवाह किया है ।" चन्द्रपाल ने जवाब दिया ।

सूर्यवर्मा ने गुस्से में आकर कहा– "मैंने इसे अपनी कन्या का दान नहीं

किया है। इसलिए सीमंतिनी के पिता के रूप में उस पर अभी तक मेरा हक़ बना हुआ है। यह विवाह न्याय सम्मत नहीं है।"

राजा ने दोनों के बीच किसी तरह से समझौता कराने की कोशिश की, मगर सीमंतिनी पर से अपने हक़ को छोड़ने के लिए न सूर्यवर्मा तैयार था और न चन्द्रपाल ही। आखिर राजा ऊब गये, बोले—"तब तो मेरा फ़ैसला सुन लो। सीमंतिनी दोनों के पास रहेगी। पतझड़ के काल तक वह अपने पति के पास रहेगी, फिर पेड़ों के ठूंठ होते ही अपने पिता के घर आयेगी। फिर से पेड़ों में कोंपलें उगने पर अपने पति के पास जायेगी।"

यह फ़ैसला न सूर्यवर्मा को पसंद आया और न चन्द्रपाल को ही। मगर दोनों को यह फ़ैसला मानना पड़ा।

थोड़े दिन बीत गये। जब पतझड़ का मौसम आया, सारे पेड़ों के पत्ते झरने लगे, तब सूर्यवर्मा ने अपनी पुत्री के पास अपने सेवकों को भेजकर उन्हें आदेश दिया कि राजा का फ़ैसला उसे सुनाकर उसे अपने साथ ले आवे। उसके मन में यह दुर्बुद्धि पैदा हो गई थी कि यदि एक बार सीमंतिनी उसके पास आवे तो फिर कभी उसे अपने पति के पास न भेजेगा।

सीमंतिनी ने अपने पिता के दूतों के मुंह से सारा वृत्तांत सुना और उन लोगों से कहा—"पेड़ों के पत्ते झरकर जब वे ठूंठ बन जायेंगे, तब तो मुझे अपने पिता के पास जाना है? लेकिन अभी तक पेड़ों के पत्ते झरे नहीं हैं न? इन पेड़ों के ठूंठ बन जाने पर मैं अपने पिता के घर ज़रूर चलूंगी।" इन शब्दों के साथ उसने अपनी कुटी के चारों तरफ़ फैले अशोक वृक्ष दिखाये। इस पर सूर्यवर्मा के सेवक लाचार होकर वापस लौट गये।

अशोक वृक्षों के पत्ते कभी नहीं झरते और न वे पेड़ कभी ठूंठ बनते हैं। इसलिए सीमंतिनी कभी फिर अपने पिता के घर न गई।
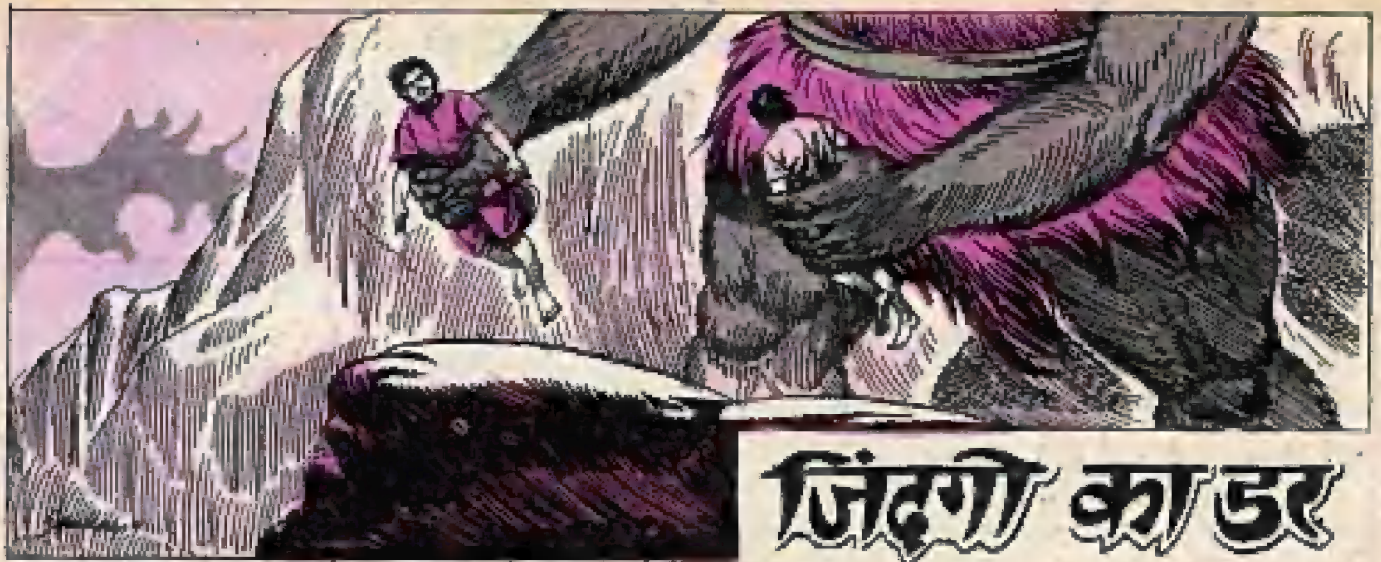
ज़िंदगी का डर

गंगाधर नामक एक भिखारी अपनी जिंदगी से ऊबकर आत्महत्या करने के लिए जंगल में स्थित एक पहाड़ की ओर चल पड़ा। रास्ते में अनंत नामक एक आदमी से उसकी मुलाक़ात हो गई। वह भी जिंदगी से ऊब चुका था।

दोनों पहाड़ के पास पहुँचे। उसकी एक ऊँची चोटी पर चढ़कर नीचे कूदने की कोशिश कर ही रहे थे, तभी एक गुफा के भीतर से अचानक एक भयंकर राक्षस बाहर निकला और उसने दोनों को पकड़ लिया।

इस पर वे दोनों डरे नहीं, बल्कि इतमीनान से बोले–"हम दोनों मरने के लिए पहाड़ की चोटी पर जा रहे हैं; तुम ने हमारी मेहनत बचाई!"

उनकी बातें सुन राक्षस अचरज में आ गया और उनसे पूछा–"आखिर तुम दोनों को आत्महत्या करने के लिए ऐसी मुसीबत क्या आ पड़ी है?"

गंगाधर ने कहा–"मैं एक भिखारी हूँ। मेरे बाप और दादा भी भिखारी थे। लेकिन मैं जब भी भीख मांगने जाता, तब हर कोई मुझे देख घृणा करते और कहते हैं कि तुम तो भैंसे की तरह हट्टे-खट्टे हो, कोई काम-वाम क्यों नहीं करते? इस पर ज़िंदगी के प्रति मेरे मन में विरक्ति पैदा हो गयी है।"

इसके बाद राक्षस ने अनंत से भी यही सवाल पूछा। अनंत ने चितापूर्ण चेहरा बनाकर जवाब दिया–"मैं अपनी मुसीबतों की कहानी क्या बताऊँ? मेरे पास थोड़ी-बहुत जमीन-जायदाद है। लेकिन मेरी औरत गहनों के पीछे पागल है। हमेशा नये गहने गढ़वाने के लिए मेरी जान खाती रहती है। यदि मैं यह बताता कि यह

ममता अग्रवाल

मेरे बूते के बाहर की बात है, मगर वह मेरी बात नहीं मानती। उससे तंग आकर ज़िंदगी के प्रति मेरे मन में विरक्ति पैदा हो गई है।"

दोनों की कहानी सुनने के बाद राक्षस गुफा के अन्दर चला गया। दो थैलियाँ भरकर सोने के सिक्के ले आया, एक थैली पहले गंगाधर के आगे रखकर बोला–"तुम्हें भीख दिये बिना गृहस्थ गालियाँ सुनाते हैं तो इसमें उनका कोई दोष नहीं है। तुम चाहे तो मेहनत कर सकते हो, लेकिन तुम आलसी हो। उस आलसीपन के दूर होने तक तुम इस धन से कोई व्यापार करो। ठीक एक साल बाद यहाँ पर आकर मुझसे मिलो।"

इसके बाद दूसरी थैली अनंत के सामने रखकर राक्षस बोला–"तुम इस धन से तुम्हारी पत्नी के लिए गहने बनवा कर दे दो और उससे साफ़ कह दो कि उन गहनों से वह संतुष्ट हो जाय। जब तुम मौत से भी न डरते हो, तो तुम्हारी पत्नी के सामने ऐसे कायर क्यों बन गये?" फिर राक्षस ने उसे भी समझाया कि वह भी एक साल बाद यहीं आकर उससे मिले।

एक साल के बीतते ही गंगाधर गुफा के पास पहुँचा। धन की थैली राक्षस के पैरों के पास रखकर बोला–"भाई, तुमने मेरी आँखें खोल दीं। कोई न कोई काम-धंधा करते हुए जीने में जो सुख मिलता है, उस रहस्य को मैंने जिस दिन जाना उसी दिन

से भीख माँगना छोड़ दिया है। तुम अपना धन वापस ले लो!"

राक्षस ने गंगाधर की तारीफ़ की और धन की थैली लेकर गुफा में फेंक दिया।

इस बीच वहाँ अनंत आ पहुँचा। उसके साथ एक औरत भी थी। उसके गले में सिवाय मंगलसूत्र के एक भी गहना न था।

राक्षस और गंगाधर उस औरत की ओर आश्चर्य के साथ देख रहे थे। तब अनंत ने समझाया-"भाइयो, यह मेरी पत्नी है!" उसने फिर राक्षस से प्राप्त धन की थैली उसके पैरों पर रख दी।

राक्षस ने अपनी भौंहें ठेढ़ी करके पूछा-"तुमने कहा था कि तुम्हारी औरत गहनों के पीछे जान देती है। लेकिन उसके बदन पर एक भी गहना दिखाई नहीं देता? उसके इस पाजीपन को छुड़ाने के लिए तुमने उसे सताया तो नहीं है न?"

इसका जवाब अनंत देने ही जा रहा था, इतने में उसकी पत्नी बोली-"भाई, आपका स्वरूप भले ही राक्षस का क्यों न हो, लेकिन आपका स्वभाव देवताओं के जैसा है! मेरे पति के इस पहाड़ी प्रदेश में आने के कारण जानकर आप ने उन्हें जो सलाह दी है, वह भी मैंने सुन ली है। पति के मन में गृहस्थी के प्रति विरक्ति पैदा करने वाले मेरे गहनों के प्रति जो पागलपन था, उसे मैंने तिलांजली दे दी है। इसके सबूत के रूप में गहनों की यह गठरी आप वापस ले लीजिए।" इन शब्दों के साथ उस औरत ने गहनों की गठरी राक्षस के सामने रख दी।

राक्षस प्रसन्नता के मारे जोर से हँस पड़ा, फिर गुफा के भीतर चला गया। गंगाधर की धन की थैली लाकर उसे लौटा दिया, फिर अनंत और उसकी पत्नी को धन और गहनों की थैलियाँ सौंप कर समझाया-"तुम तीनों के स्वभावों में ऐसे बड़े परिवर्तन होने के बाद यह धन और गहने भविष्य में तुम्हारी कोई हानि नहीं कर सकते! इसलिए तुम लोग यह संपत्ति अपने साथ लेते जाओ।"

प्रसन्नवदना और मोहना ये दोनों बहनें क्रमश: मूर्तियों को देखते आगे बढ़ीं, आखिर वे निराश हो लौटने को थीं, इतने में बाहर बच्चों का कोलाहल देख अचरज में आकर ठिठक गईं।

उसी वक्त उन्हें यह कंठ स्वर सुनाई दिया–"वहाँ पर कम मूल्यवाले रंगों से सुसज्जित एक प्रतिमा है। उसको भी देखने क्यों नहीं जातीं?"

ये बातें सुन मोहना बोली–"चलो, दीदी! वह प्रतिमा शायद कम दाम में मिलने वाली है।" यों कहकर प्रसन्नवदना का हाथ पकड़ करके आगे बढ़ी। इस पर प्रदर्शन शाला में उपस्थित स्त्री-पुरुष सब उनके पीछे हो लिये।

प्रसन्नवदना ने मुद्राओं की थैली प्रतिमा के सामने रख दी, अपने कंठ में सुशोभित मरकत रत्नहार को उतारा, सर झुकाये बैठे हुए विचित्र के हाथ में कंगण की तरह लपेट दिया।

उस घटना को देख लोग आश्चर्य में आ गये और आपस में कानाफूसी करने लगे–"लगता है कि ये दोनों युवतियाँ पागल हैं। वरना वहाँ पर रखी हुई अपूर्व प्रतिमाओं को छोड़ यहाँ पर रखी साधारण प्रतिमा के पीछे अपना धन क्यों उंडेल रही हैं?"

इस पर प्रसन्नवदना उन लोगों की शंका को दूर करते हुए बोली–"यहाँ पर प्रतिष्ठित मूर्ति में जिस विशेषता को देख बच्चे मुग्ध हो रहे हैं, उसी विशेषता ने हमें भी उसकी

पावन, बातापि गणेशजी की कृपा से हमारी खोज सफल हुई है। तुम इतने बड़े होने के बाद हमें दिखायी दे रहे हो।" इन शब्दों के साथ अपने पुत्र के साथ आलिंगन करके वे दोनों माता-पिता आनंद-बाष्प गिराने लगे। अब विचित्र भी बाल्यावस्था को पार कर यौवनावस्था में प्रवेश कर रहा था। वह भी अपने माता-पिता को देख बहुत ही आनंदित हुआ। उसे अपना सारा भूत कालीन जीवन याद हो उठा। उसका असली नाम भी स्मरण हो आया।

बाप-बेटे को कई वर्षों के बाद मिलते देख प्रसन्नवदना संतुष्ट हुई और बोली– "अभी अभी हमारी कामना पूरी हो गई। हम अपनी मनौती पूरी करेंगी।"

इसके बाद थोड़े समय में लोगों ने पंडाल बनाया, मंच तैयार किया। प्रसन्नवदना विनायक की प्रतिमा के पास बैठे ताल देते हुए–"तांडव नृत्य करी गजानन..." नामक कीर्तन गाने लगी। मंच पर मोहना विद्युल्लता की भांति नाचने लगी, उस दृश्य को देख जनता तन्मय हो आनंद सागर में गोते लगाने लगी।

प्रसन्नवदना का कीर्तन गजानन पंडित को सुनाई दिया। उस समय गजानन पंडित की आयु सौ साल से ज्यादा हो चुकी

ओर आकृष्ट किया है। कहा जाता है कि बच्चे देवताओं के समान होते हैं और उनके आशीर्वाद ब्रह्मा के आशीर्वाद जैसे हैं। इसीलिए हमने उनके चुनाव को स्वीकार कर लिया है।"

मोहना बोली–"मृत्तिका शिल्प में जो रूप-सौंदर्य और शोभा को प्रतिबिंबित न कर पाये, उसे चूने, कोयले, लाख इत्यादि रंगों से मूर्तीभूत करने वाले चित्रकार की प्रतिमा अपूर्व है। इस सुंदर प्रतिमा के वास्ते हमारा पुरस्कार थोड़ा सा ही माना जाएगा।"

उसी समय विचित्र के वृद्ध माता-पिता वहां पर आ पहुंचे। वे बोले–"बेटा

थी और वह अपने घर से बाहर निकलने व यहाँ तक कि हिलने की हालत में न था। फिर भी उसे न मालूम कहाँ से वह अपूर्व ताक़त प्राप्त हुई, दौड़ने जैसी गति के साथ पंडाल में पहुँचा। प्रसन्नवदना को हाथ जोड़ कर प्रणाम किया, साष्टांग की मुद्रा में ध्यान मग्न हो गया।

नृत्य करते-करते मोहना ने तन्मय की अवस्था में उस भारीविनायक की प्रतिमा को बड़ी आसानी से अपने कंधे पर उठाया। उसे देख जनता चौंक पड़ी और मोहना को समझाने लगी–"बहन, तुम इतना भारी बोझ उठा न सकोगी।" इसके जवाब में मोहना बोली–"यह मेरे लिए कोई नई बात नहीं है।" ये शब्द कहकर मूर्ति को उठाये नृत्य मुद्रा में निकल पड़ी। सारी जनता उसके पीछे चल पड़ी। उस कोलाहल में किसी को पता ही न चला कि प्रसन्नवदना कब गायब हो गई।

ध्यान मुद्रा से गजानन ने आँखें खोलीं; सामने मूर्ति की जगह स्वर्ण मुद्राओं से भरी सोने की जरीदार थैली दिखाई दी। उसके चरणों के पास कलाकार विचित्र घुटने टेक बैठा हुआ था।

गजानन पंडित विचित्र से बोला–"तुम मंदिर के मण्डप की दीवारों पर गणेश की लीलाओं को अंकित कर दो! इसके लिए आवश्यक धन प्रसन्नवदनवाले विघ्नेश्वर ने दे दिया है न?"
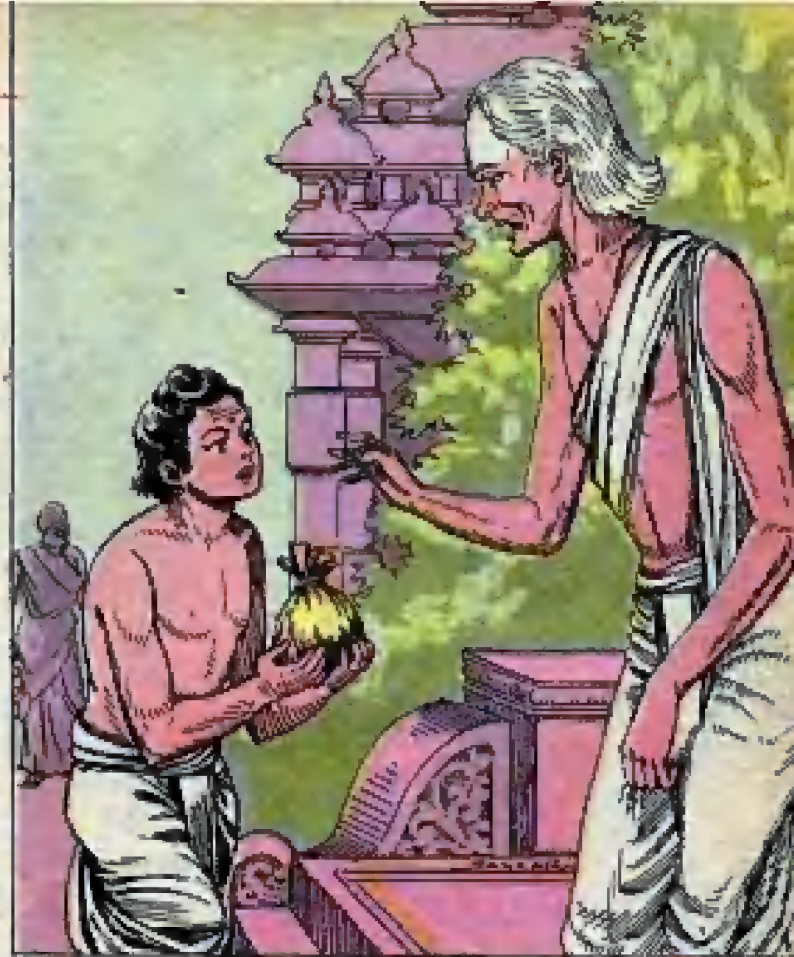
इस के बाद गजानन पंडित उठ खड़ा हुआ और विचित्र को साथ लेकर जुलूस के साथ चल पड़ा।

मोहना उस मूर्ति को लेकर मंदिर के तड़ाग के पास पहुँची, तड़ाग की सीढ़ियों पर उतरते हुए अचानक गायब हो गई और उसकी जगह एक चूहा मूर्ति को अपनी पीठ पर ढोते हुए पानी के भीतर दौड़ पड़ा। उसी दिन सभी प्रतिमाओं को जल निमज्जन करने वाला उत्सव मनाया जानेवाला था।

फिर पावन मिश्र के चरणों पर प्रणाम करके बोला–" आप के पावन चरित को सुन मैं धन्य हो गया हूँ। मेरा नाम आनंद है। आपके पावन नाम वाले प्रथम दो अक्षरों को बदल कर अपने नाम के पहले जोड़कर मैं "वपानंद" कहलाऊँगा। यह मण्डप पावन चित्रालय है। इस पावन मण्डप के चित्रों की प्रतिकृतियों की मैं रचना करूँगा। आने वाली पीढ़ियों के लिए आप ने जो कहानियाँ सुनाईं, वे सब उन्हें सुनाऊँगा। मुझ पर अनुग्रह कीजिए।" इन शब्दों के साथ उसने अपना मस्तक झुका लिया।

मूर्ति के तड़ाग के मध्य पहुँचने पर वह करोड़ों पूर्णिमाओं जैसे प्रकाश पुंज से पूर्ण शोभित थी। उस प्रकाश के भीतर अभय हस्त की मुद्रा में विघ्नेश्वर सब को दर्शन देकर अंतर्धान हो गये।

गजानन पंडित विचित्र के साथ गाढ़ालिंगन करके बोला–"बेटा पावन! तुम्हारी वजह से वातापि नगर को पावनता प्राप्त हुई। इसलिए आज से तुम पावन मिश्र कहलाओगे।" ये शब्द कहकर पावनमिश्र आगे बोला–"गर्भ गृह के मुखद्वार पर महा भारत की रचना वाला जो चित्र है..." पावन मिश्र की बात पूरी न हो पाई थी, युवा चित्रकार बोल उठा–"गुरु देव!"

वृद्ध पावन मिश्र उस युवक के सर पर हाथ रख कर आशीर्वाद देते हुए मंदहास करके पुनः सुनाने लगा–"व्यास मुनि महा भारत की जो कथा सुनाने वाले थे, उसे लिखने की सामर्थ्य रखने वाले कौन हो सकते हैं, इस बात पर वे विचार कर ही रहे थे कि तब ब्रह्मा ने साक्षात्कार करके उन्हें विघ्नेश्वर को लेखक बनाने को सुझाया। ब्रह्मा के आदेशानुसार व्यास मुनि ने विघ्नेश्वर से प्रर्थना की।

विघ्नेश्वर ने प्रसन्न होकर कहा–"व्यास महर्षि, आप अपने ढंग से कथा सुनाते जाइये, लेकिन मेरी शर्त यह रहेगी कि आप भूल से भी मेरी ओर मत देखियेगा।"

यों जवाब देकर गणेशजी महा भारत की कथा लिखने बैठ गये।

इसके बाद विघ्नेश्वर अपने दंत के टुकड़े को लेखनी बनाकर बराबर लिखते गये। व्यास मुनि अर्ध निमीलित नेत्रों के साथ ध्यान मग्न हो धारावाही सुनाने लगे।

सामने हिमालय की चोटी से गिरने वाला जल प्रपात मध्यमावती राग जैसे मंद्र गंभीर स्वर में नेपथ्य संगीत की भांति श्रुति मिला रहा था। देवदारु वृक्ष सर हिला रहे थे। महा भारत की रचना चलने लगी।

जन्मांध धृतराष्ट्र हस्तिनापुर की गद्दी पर बैठे। उनके छोटे भाई पांडु राजा साम्राज्य की जिम्मेदारी निभाते राज्य का विस्तार करने लगे। कालांतर में राजा पांडु के पांच पुत्र और धृतराष्ट्र के सौ पुत्र—कौरव पैदा हुए।

बचपन से ही पांडव और कौरवों के बीच ईर्ष्या बढ़ती गई।

व्यास मुनि कथा सुना रहे थे, विघ्नेश्वर लिखते जा रहे थे। सभा पर्व की रचना चल रही थी।

मय सभा में अपमानित हो दुर्योधन ने बदला लेने के विचार से जुएँ में पांडव और उनकी पत्नी द्रौपदी को जीत लिया और द्रौपदी का चीर हरण करने का निश्चय किया।

इस पर क्रोध में आकर भीमसेन ने दुर्योधन की जांघ तोड़ने तथा दुश्शासन का खून पी जाने की धमकी दी।

पांडव वनवास समाप्त करके राजा विराट के दरबार में अज्ञातवास करने लगे। सैरंध्री के रूप में रहने वाली द्रौपदी का कीचक ने अपमान किया और भीमसेन के हाथों में जान खो बैठा। उत्तर गोग्रहण में बृहन्नला ने कौरव सेनाओं को मार भगाया।

इसके बाद अभिमन्यु और उत्तरा का विवाह हुआ। कृष्ण ने दूत कार्य करके पांडवों केलिए पांच गांवों की मांग की,

पर दुर्योधन ने सूई की नोक के बराबर की भी ज़मीन देने से इनकार किया ।

आखिर युद्ध अनिवार्य हो गया । श्री कृष्ण अर्जुन के रथ सारथी बने । अर्जुन को भगवद् गीता का उपदेश दिया ।

भीष्म शर शय्या पर पहुँचे । द्रोणाचार्य ने पद्मव्यूह की रचना की । सभी कौरवों ने मिलकर अन्यायपूर्वक अभिमन्यु का वध किया । सभुद्रा पुत्र शोक से भर उठी ।

अर्जुन ने अपने शौर्य और प्रताप का परिचय दिया । दृष्टद्युम्न ने द्रोण का सर काट डाला । उधर दुर्योधन कर्ण के बल-पराक्रम पर निर्भर था, लेकिन कर्ण की मृत्यु के बाद वह भी निराशा से भर उठा । भीम ने दुश्शासन का वध किया और दुर्योधन की जांघ तोड़ डाली ।

जुएं में पराजित युधिष्ठिर ने अपने भाइयों की मदद से भीकर युद्ध करके कौरवों पर विजय प्राप्त कर विजय दुंदुभी बजाई ।

श्री कृष्ण ने अपना अवतार समाप्त किया ।

परीक्षित का राज्याभिषेक करके पांडव द्रौपदी के साथ महाप्रस्थान पर चल पड़े ।

धर्म की मौत नहीं होती, आखिर धर्म की ही विजय होती है । इस सत्य को साबित करने के लिए शायद युधिष्ठिर मेरु शिखर पर खड़े हो गये ।

जल प्रपात की ध्वनि क्षीण होती गई, ऐसा लग रहा था कि यह बताना मुश्किल है कि व्यास की बताई गई कथा विघ्नेश्वर लिख रहे हैं या विघ्नेश्वर के द्वारा लिखी जाने वाली कथा व्यास कहते जा रहे हैं ? तेजी के साथ महा भारत की रचना चल रही थी ।

उधर सत्य लोक में ब्रह्मा ने पद्मासन पर आसीन हो संतुष्टि के साथ मुस्कुराते हुए सरस्वती की ओर सार्थक दृष्टि प्रसारित की । दूसरे ही क्षण सरस्वती ने वीणा की तंत्रियों को झंकृत कर श्रीराग का आलाप करना शुरू किया ।

महा भारत की कथा समाप्त होने को थी ; अंतिम पर्व की रचना चल रही थी ।

सरस्वती देवी के द्वार। सत्य लोक से मंगलाचरण के रूप में श्रीराग का आलाप करने वाला प्रसंग व्यास महर्षि को विघ्न मालूम होने लगा ।

कथा की रचना अभी शेष थी । व्यास मुनि ने अन्य मनस्क हो लेखक की ओर देखा ; दूसरे ही क्षण विघ्नेश्वर अंतर्धान हो गये ।

महा भारत ग्रंथ पर आसमान से अक्षतों की भांति झर झर फूल गिर गये ।

व्यास मुनि ने ग्रंथ को खोल कर बड़ी आतुरता के साथ देखा । उन्हें जो कुछ बताना शेष था, वह सब अक्षरशः पूर्ण रूप से लिखा गया था । व्यास आनंद और आश्चर्य के साथ पुलकित हो रहे थे, तभी महती वीणा पर हंस ध्वनि का राग सुनाई दिया ।

नारद मुनि ने प्रवेश करते ही पूछा– ''महा भारत के महर्षि, आश्चर्य के साथ आप यह क्या देख रहे हैं ? "

व्यास मुनि ने सारी घटना सुनी ।

" इसका मतलब है कि आप जो कुछ बताना चाहते थे, उसके बताने के पहले ही लेखक लिखते गये हैं न ? " नारद ने पूछा ।

" जी हाँ, नारद, यही हुआ है । अनेक तपस्याएँ करने के बावजूद भी ऐसे लेखक किसी को भी प्राप्त नहीं हो सकते । मैं धन्य हो गया हूँ ! मेरा संकल्प सफल हो गया है ! इसलिए मैं महा भारत को ''जय" भी कहूँगा । " इन शब्दों के साथ व्यास मुनि ने हाथ जोड़ कर विघ्नेश्वर का ध्यान किया ।

महा भारत के निकट एक विशाल ज्योति बढ़ती गई । इस पर विघ्नेश्वर ने प्रत्यक्ष होकर कहा–"व्यास महर्षि ! आप का महा काव्य पंचम वेद बन कर एक अपूर्व काव्य के रूप में सर्वत्र प्रशंसा प्राप्त करेगा ।" यों आशीर्वाद देकर वे अंतर्धान हो गये ।

विघ्नेश्वर के द्वारा दंत लेखनी से लिखा गया महाभारत सभी युगों में साहित्य के क्षेत्र में नक्षत्रों में चन्द्रमा जैसे स्थाई रह गया । (समाप्त)

भोला मानव

लेबनान देश के एक गाँव में हुनी और मरियम नामक दंपति निवास करते थे। हुनी वैसे स्वभाव से अच्छा आदमी था, लेकिन मंदबुद्धिवाला था। वैसे वह कामचोर भी था, लेकिन मरियम बड़ी अक़्लमंद और क़ाबिल औरत थी। वह अमीरों के घरों में झाड-बुहार और चौका-बर्तन का काम करके अपने और अपने पति का पेट पालती थी। साथ ही जब भी मौक़ा मिलता, तब वह अपने पति पर दबाव डालती कि कहीं जाकर कोई काम-धाम ढूंढ ले। पर हुनी उसकी बातों की परवाह न करता, बल्कि मुस्कुरा कर रह जाता।

एक दिन मरियम अचानक बीमार पड़ी, इसलिए काम पर जा न पाई। उस दिन सचमुच हुनी पर उसे बड़ा गुस्सा आया। उसने हुनी को समझाया—"तुम कोई काम-धंधा करके पैसे न लाओगे तो आज हम दोनों को फाका करना पड़ेगा। गाँव के मुखिये के पास जाकर गधे हाँकने का काम माँग क्यों नहीं लेते? उनके घर के काम के वास्ते तुम्हें गधे पर कहीं आना-जाना पड़ेगा।"

दूसरे दिन सबेरे उठ कर हुनी गाँव के मुखिये के घर पहुँचा। मुखिया पहले से ही हुनी के भोलेपन के बारे में और उसकी पत्नी के द्वारा उसका पालन होने की बात पूरी तौर से जानता था। हुनी को देखने पर मुखिये को उस पर रहम आई। उसकी मदद करने के ख्याल से उसके हाथ में सोने का एक दीनार देकर एक गधा खरीद लाने को बोला। हुनी बेरूत नगर में जाकर वहाँ की हाट में एक मोटा-ताजा गधा खरीद लाया और वह उसी दिन से गाँव के मुखिये के यहाँ काम करने लगा।

मालिक उसे जिस दिन का वेतन उसी दिन दे देता था।

एक दिन गाँव का मुखिया हुनी से बोला–"तुम बेरूत जाकर अमुक दूकान से एक बोरा चावल खरीद लाओ।"

उस दूकान से हुनी परिचित था। लेकिन उस दिन हुनी को आलसीपन ने घेर लिया, इसलिए हुनी के मन में बेरूत जाने की इच्छा न हुई, लेकिन उसको ऐसा लगा कि चावल खरीद लाने के लिए सिर्फ़ गधे को भेज दे तो वह मेहनत से बच सकता है।

इसी ख्याल से वह गधे के पास पहुँचा और बोला–"सुनो, हमें बेरूत नगर का जो दूकानदार हमेशा चावल दिया करता है, वहाँ जाकर तुम एक बोरा चावल खरीद ला ओगे?"

गधे ने अपनी आदत के मुताबिक अपना सर ऊपर-नीचे हिलाया, पर हुनी यह सोच कर खुश हुआ कि गधे ने उसकी बातें समझ ली है और उसके आदेश का पालन करने को मान लिया है। उसने गधे के सर पर एक पगड़ी बांध दी, उसकी तहों में मालिक से प्राप्त एक दीनार को लपेट कर बांध दिया और गधे को बेरूत के रास्ते पर छोड़ तब तक उसकी ओर देखता रहा, जब तक कि वह गधा उसकी आँखों से ओझल न हुआ। तब वह अपने घर लौट आया। बड़ी देर करके गधे के बिना घर लौटे हुए अपने पति को देख मरियम अचरज में आ गई और उसने उत्सुकता पूर्वक पूछा–"तुम बेरूत क्यों नहीं गये? हमारा गधा कहाँ है?"

"मैंने गधे को अकेले ही बेरूत भेज दिया है! मैंने उससे पूछा कि क्या तुम अकेले जाकर मालिक के वास्ते चावल खरीद लाओगे? उसने मान लिया और उसी वक़्त चला गया।" हुनी ने अपनी औरत को समझाया।

"तुम तो निरे गोबर गणेश हो! हमारे हाथ से एक साथ गधा और दीनार दोनों

निकल गये! तुम जल्दी जाकर ढूंढ़ लो! इसी वक्त बेरूत के रास्ते पर चले जाओ, पर याद रखो कि गधे और चावल के बिना तुम घर मत लौटो।" मरियम ने धमकी दी।

हुनी घर से भाग निकला और बेरूत रास्ते पर हो लिया। वह तब तक उस रास्ते पर दौड़ता गया जब तक थकावट के मारे उसकी आँखें व जीभ बाहर न निकलीं। पर उसे कहीं गधा दिखाई नहीं दिया।

हुनी बेरूत पहुँचा और अपनी परिचित दूकान पर पहुँच कर पूछा–"अजी, क्या हमारे गधे ने कल आप की दूकान से चावल खरीद लिया है? अभी तक वह घर नहीं लौटा है!"

चावल के व्यापारी ने हुनी की ओर देख समझ लिया कि यह तो कोई पाजी है! उसका मजाक उड़ाने के ख्याल से बोला–"तुम्हारा कहना सही है, गधा आज सवेरे यहाँ पर जरूर आया था। मगर उसे हमारी दूकान का चावल बिलकुल पसंद न आया। इसलिए वह उसी वक्त एक और दूकान पर चला गया।" इन शब्दों के साथ उसने एक और दूकान की ओर इशारा किया।

इस पर हुनी बाजूवाली दूकान पर पहुँचा। उस वक्त पहली दूकान के मालिक ने दूसरे दूकानदार को इशारा किया। दूसरा दूकानदार उसका संकेत समझ गया, जब हुनी उसकी दूकान पर

ले आना होगा। वरना मरियम उसे घर में क़दम रखने न देगी! इसलिए वह उस दूकानदार के पास एक दीनार उधार लेकर जफ़ा की ओर चल पड़ा।

हनी जफ़ा पहुँच कर सारी दूकानों के पास अपने गधे की खोज करता रहा, लेकिन कहीं उसे गधे का पता न चला। इस पर रास्ता चलनेवाले एक आदमी को रोककर पूछा–"भाई, यह बता दो कि इस शहर-भर में चावल की बड़ी दूकान कौन-सी है?"

इसके बाद वह गल्ले की उस बड़ी दूकान पर पहुँचा और पूछा–"महाशय, क्या हमारा गधा मेरे मालिक के वास्ते चावल ख़रीदने के लिए यहाँ पर तो नहीं आया?"

वह दूकानदार उस नगर के प्रधान न्यायाधिपति से जलता था। हनी के मुंह से ये बातें सुनने पर उसके दिमाग में यह बात कौंध गई कि न्यायाधिपति से बदला लेने का यह एक अच्छा मौक़ा है। उसने मैत्री भाव से हनी को समझाया–"थोड़ी देर पहले तुम्हारा गधा हमारी दूकान में जरूर आया था। चावल के दर के बारे में वह मेरे साथ मोल-भाव करने लगा। उस हलचल को देख यहाँ पर भारी भीड़ लग गई। तुम्हारे गधे

पहुँचा तब उसने पूछा–"बताओ, भाई! तुम्हें क्या चाहिए?"

हनी ने दूकानदार से पूछा–"क्या मेरे गधे ने तुम्हारी दूकान में चावल ख़रीद लिया है? अभी तक तो वह हमारे घर लौटा नहीं है?"

"तुम्हारा गधा तो यहाँ पर आया जरूर था, लेकिन वह कह रहा था कि उसे बेरूत का चावल पसंद न आया। यह कह कर जफ़ा नगर को चला गया कि वहाँ पर अच्छा चावल मिलता है।" दूसरा दूकानदार बोला।

यह जवाब पाकर हनी घबड़ा गया। क्योंकि उसे जफ़ा नगर में जाकर गधे को

की अक़्लमंदी पर खुश होकर लोगों ने उसको न्यायाधिपति के रूप में नियुक्त किया है। इस समय वह मनुष्य का रूप धरकर अदालत में इन्साफ़ कर रहा है।"

इसके बाद दूकानदार हूनी को न्यायालय तक छोड़ कर चला गया।

हूनी के मन में यह शक पैदा हुआ कि बड़ा ओहदा पाया हुआ उसका गधा शायद अब उसके साथ न चलेगा। इसलिए वह झट मूली बेचनेवाली दूकान पर पहुँचा, मूली खरीद कर न्यायालय के पास पहुँचा, पर दरबानों ने उसे न्यायालय के भीतर जाने से रोका। हूनी उसके साथ झगड़ने लगा।

न्यायाधिपति ने उस झगड़े का कारण पूछा। उनको हूनी का समाचार बताया गया। न्यायाधिपति ने अंदाजा लगाया कि यह करतूत चावल की दूकानदार की ही होगी। उसने अपने गुस्से पर क़ाबू रखकर हूनी को अन्दर बुला भेजा।

हूनी भीतर पहुँच कर अपने हाथ की मूली उसकी ओर बढ़ाकर बोला—"यह तो मेरा गधा है। इसने न्यायाधिपति की पोशाकें पहन रखी हैं। मैंने इसकी पगड़ी में एक दीनार भी छिपा रखा है।"

न्यायाधिपति समझ गया कि हूनी एक दम पाजी है। वह बड़ी शांति के साथ बोला—"तुमने अपने गधे को कितने में खरीदा है?" हूनी ने बताया कि उसने एक दीनार में खरीदा है।

इस पर न्यायाधिपति ने हूनी के हाथ चार सोने के दीनार देकर उसे समझाया कि तुम कुछ गड़बड़ किये बिना यहाँ से चले जाओ।

हूनी की जान में जान आ गई। उसने एक गधा और एक बोरा चावल खरीदा और बोरा गधे पर लाद कर अपने मालिक के घर पहुँचा; उन्हें सौंप कर अपने घर लौट आया।

इसके बाद हूनी ने कभी गधों की बात पर यक़ीन नहीं किया।
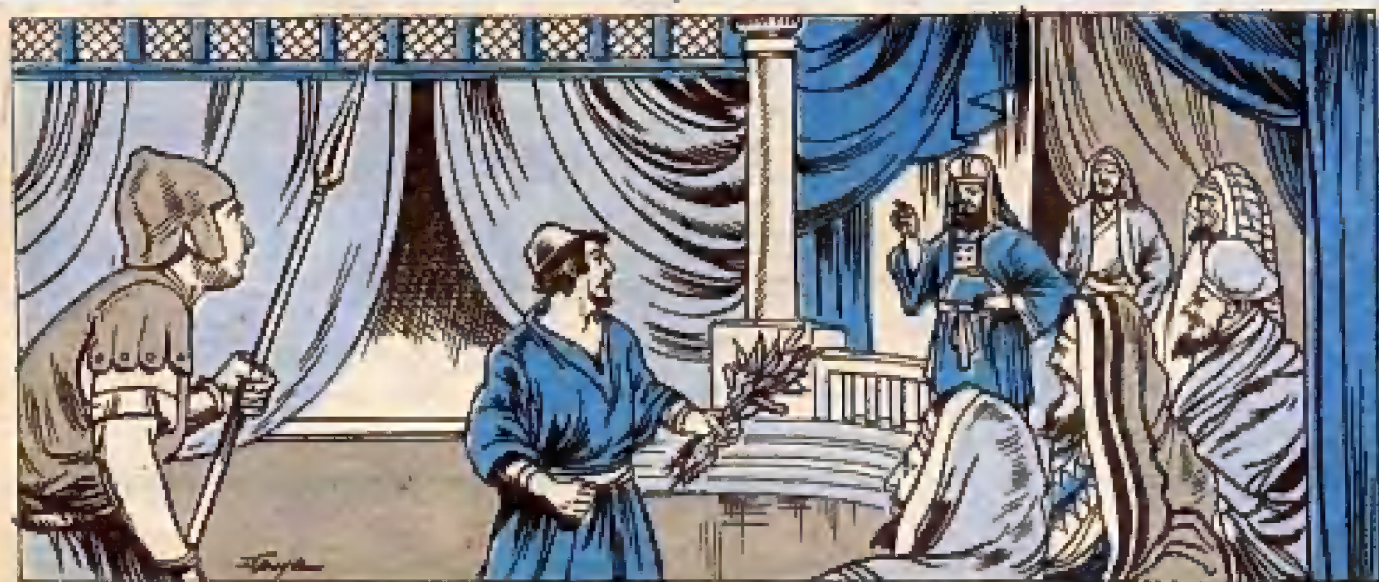
फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ मार्च १९८३ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

Pranlal K. Patel

Devidas Kasbekar

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों।

★ जनवरी १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा।

★ दोनों परिचयोक्तियाँ कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें : चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

नवम्बर के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो : आओ तुम्हें शहर घुमायें!

द्वितीय फोटो : झुलाकर तुम्हारा मन बहलायें!!

प्रेषक : श्री गोविन्द गर्दे, ३५, नेवालकर बाड़ा, कोठी कुआँ, झांसी (उ. प्र.)

पुरस्कार की राशि रु. ५० इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी।
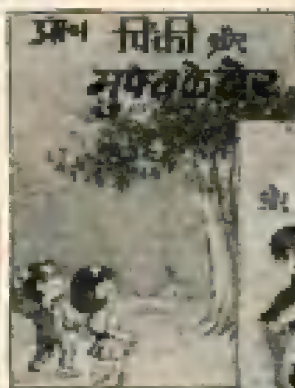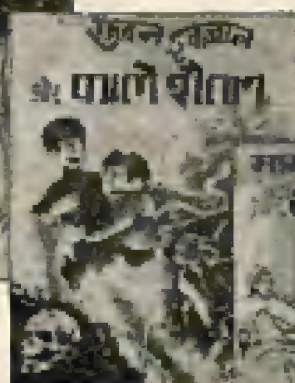
Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 188, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.
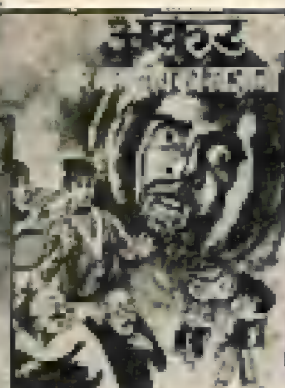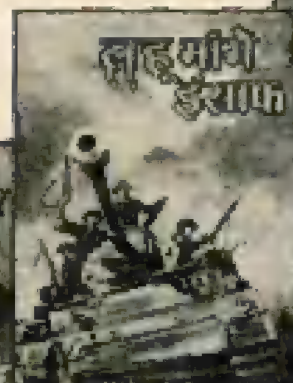
चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पांचवीं तारीख से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये। यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे। आपके सहयोग की आशा है।

डाल्टन एजन्सीस, मद्रास-६०० ०२६

सिक्का उछालो
"कौन पहले केनरा बैंक के काउण्टर तक पहुँचेगा"
तीन खिलाड़ियों के लिए, एक सरल, किंतु रोमांचकारी खेल। आपको केवल चार सिक्के और तीन बटन जुटाने हैं। नियम इसके साथ ही दिए गए हैं।
START HERE
कीचड़
केनरा बैंक
(एक राष्ट्रीयकृत बैंक)

"कौन पहले केनरा बैंक के काउण्टर तक पहुँचेगा"? के लिए नियम

1. शुरू में प्रत्येक खिलाड़ी बारी-बारी से चारों सिक्के उछालेगा। जितनी बार चित गिरेगा, खिलाड़ी उतनी बार चाल चला सकता है - एक चित, एक चाल; दो चित, दो चाल; तीन चित, तीन चाल; चार चित, चार चाल।
2. जब एक खिलाड़ी सभी सिक्के चित में उछालता है वह और एक बार खेल सकता है।
3. केनरा बैंक के काउण्टर की ओर जानेवाली गली में प्रवेश करने से पहले, खिलाड़ियों को तीन बार रास्ते का चक्कर काटना चाहिए।
4. कीचड़ में गिरने पर एक बारी नष्ट होगी।
5. झाड़ी में उलझ जाने पर दो बारी नष्ट होंगी।
6. पहाड़ पर चढ़ जाने से एक बारी और मिलेगी।

आप एक नाबालिग हैं। तो क्या?

अपनी मम्मी या पापा से कहें कि केनरा बैंक में आपके लिए एक खाता खोल दें। अगर आप 14 वर्ष के हैं तो खुद खाता खोल सकते हैं और परिचालन कर सकते हैं। आएँ और उसका पूरा-पूरा मजा लें। मात्र रु. 5/- के साथ आज ही आप शुरू कर सकते हैं।

विद्यानिधि

क्या आप डाक्टर, इंजीनियर, या वैज्ञानिक बनना चाहते हैं?

तो, विद्यानिधि उसका जवाब है। मम्मी और पापा से आज ही एक खाता खोलने के लिए कहें। आपकी उच्च पढ़ाई चिंता से मुक्त रहेगी।

बालक्षेम

होशियार बच्चे अपने सभी जेबी-पैसे खर्च नहीं कर देते। उसमें से थोड़ा वे केनरा बैंक के टी. वी. बॉक्स में रखते हैं। आप भी होशियार बनें। मम्मी और पापा से केनरा बैंक में एक बालक्षेम खाता खोलने के लिए कहें। टी. वी. बॉक्स में सिक्के डालना शुरू करें और अपने पैसे को बढ़ते हुए पाएँ। आपके सभी सपने साकार होंगे।

केनरा बैंक से मुफ्त स्टिक्कर्स

उन्हें, केनरा बैंक की उस शाखा से प्राप्त करें, जहाँ आपका एक बालक्षेम या नाबालिग खाता है।

केनरा बैंक
(एक राष्ट्रीयकृत बैंक)

maa(s)CB 8 Hin a 82

Results of Chandamama—Camlin Colouring Contest No. 26 (Hindi)

1st Prize: S. Chandrasekhar, Bhubaneswar-751 004. *2nd Prize:* Syam Prakash Joshi, New Delhi-13. Darshan Natvarlal Jani, Ahemdabad-380 001. Rajeev Agrdwal, Kathmandu. *3rd Prize:* Neeta Bhatia, New Delhi-110 027. Kumari Vaish Upendranaidu, Bombay-54. Rajesh Sojrane, Amravati. Sandesh Penkar, Bombay-37. Gipli Lodha, Rajashtan. Sunil Ramakrishna Raokaley, Maharashtra. Kumari Nidhi Gehlot, Jodhpur. Pankaj Chougaonkar Guna. Sungeev Kumar, Jodhpur.

जादूगर का बेटा... बन्टी!
THANK YOU!
एक समय एक बहुत ही बुद्धिमान जादूगर था··· जिसका नाम भी था जादूगर. सारी दुनिया में वही एक महान जादूगर था अपने जादू के कमाल से वह ऐसे-ऐसे कारनामे करता था कि लोग दंग रह जाते थे. कभी छत से आदमियों का उल्टा लटका देता. तो कभी जानवरों से इन्सान की बोली बुलवाता और कभी हवा में से नई-नई चीज़ें निकालता.
जादूगर अपने जादू के राज़ किसी को भी नहीं बताता था. वह तो केवल अपने बेटे को ही अपने जैसा महान जादूगर बनाना चाहता था. पर दुर्भाग्यवश जादूगर के बेटे को अपने पिता के जादू में कोई रुचि नहीं थी. वह कहता– "पिता जी मैं जादूगर नहीं बनना चाहता"–जादूगर परेशान हो गया. असमंजस में पड़ा सोचने लगा कि क्या किया जाए? अचानक उसके दिमाग में एक योजना आई. भागा-भागा वह बाज़ार गया और **रावलगांव स्वीट्स, टॉफ़ी और एकलेअर्स** का पैकेट ले आया.
दूसरे दिन उसने बेटे से कहा कि वह उसके लिए बहुत ही शानदार इनाम लाया है. लेकिन इनाम उसे तभी मिलेगा, जबकि वह दिल लगाकर जादू के सारे सबक सीख लेगा. इनाम की लालच में बन्टी ने दिल लगाकर जादू के सभी कमाल सीख डाले. उसे बहुत मज़ा भी आया उन्हें सीखने में। जादूगर बहुत खुश हुआ और खुश होकर उसने बन्टी को पैकेट दिया. जैसे ही बन्टी ने पैकेट खोला, खुशी के मारे वह उछल पड़ा!! "धन्यवाद पिताजी! **रावलगांव स्वीट्स, टॉफ़ी और एकलेअर्स** मुझे बेहद पसंद है... इनका प्यारा स्वाद मेरा मनभावन है।"
बहुत जल्द बन्टी भी एक बड़ा जादूगर बन गया स्वयं बन्टी ने भी जादू की नई-नई कलाएं खोज डालीं.
क्या तुम जानते हो उस नन्हे जादूगर की पसंद क्या थी? हवा से **रावलगांव स्वीट्स, टॉफ़ी और एकलेअर्स** की बरसात करना?
जादू का ऐसा अनोखा कमाल जिसे हर बच्चा पसंद करता था.
अब कहो, है न कमाल का यह नन्हा जादूगर?
ABRA CA DABRA
Ravalgaon
रावलगांव
स्वीट्स, टॉफ़ी और एकलेअर्स
उत्तमता का स्वाद
MORE
IT'S FUN